समकालीन साहित्य, संस्कृति, कला और विचार का मासिक

उत्तर प्रदेश

जुलाई—2024, वर्ष 49

₹ 15/-

आशिया अफ़रोज की एक कविता

भरपेट रोटी

थके बदन
अधूरी नींद
और अलसाये मन
को लेकर
आज फिर से
वो सुबह सबसे
पहले उठ गया
ताकि
सब आराम से
सो सकें
अपनी ज़िम्मेदारी को निभाने
घर को चलाने
के लिए
रोज़ की आपा–धापी
निकलने की जल्दी में
आज फिर से
टिफिन भूल गया
जल्दी है उसको
निकलने की
पहुंचने की
कमाने की
ताकि
खिला सके
वो सबको
भरपेट रोटी

◆

पता : सरोजनीनगर, बिजनौर,
लखनऊ
मो. : 9721856191

अनुक्रम

चिन्तन

- मृत्यु के पहले नहीं मरना है ❑ विजय कुमार तिवारी / 3

कहानी

- रामोतर की फोटो ❑ डॉ. जया आनंद / 8
- टूटे पंखों वाली चिड़िया ❑ नीरज नीर / 14

व्यंग्य

- पाण्डेय जी और उनके जीवन का टर्निंग प्वाइंट ❑ लालित्य ललित / 19

कविताएँ

- आशिया अफ़रोज की एक कविता ❑ आवरण–2
- अनुजा का एक गीत ❑ आवरण–3
- मंजुला श्रीवास्तव की कविताएँ / 22
- स्नेहमधुर की कविताएँ / 24

पुस्तक समीक्षा

- लालित्य ललित ❑ सूर्य कांत शर्मा / 27
- अंतस को झखझोरती कहानियाँ ❑ रोचिका अरूण शर्मा / 30

उत्तर प्रदेश

❑ वर्ष 49 ❑ अंक 65
❑ जुलाई, 2024

संरक्षक एवं मार्गदर्शक : ❑ **संजय प्रसाद**
प्रमुख सचिव, सूचना

प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी : ❑ **शिशिर**
सूचना निदेशक, उत्तर प्रदेश

सम्पादकीय परामर्श : ❑ **अंशुमान राम त्रिपाठी**
अपर निदेशक, सूचना
❑ **डॉ. मधु ताम्बे**
उपनिदेशक, सूचना
❑ **डॉ. जितेन्द्र प्रताप सिंह**
सहा. निदेशक, सूचना

प्रभारी सम्पादक : ❑ **दिनेश कुमार गुप्ता**
उपसम्पादक, सूचना

अतिथि सम्पादक : ❑ **कुमकुम शर्मा**
आवरण : **अन्तरिक्ष**
भीतरी रेखांकन : **आस्था**
सम्पादकीय संपर्क : सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, पं. दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ
मो. : 8960000962, 9412674759
ईमेल : upmasik@gmail.com
दूरभाष : कार्यालय : ई.पी.ए.बी.एक्स 0522–2239132–33, 2236198, 2239011

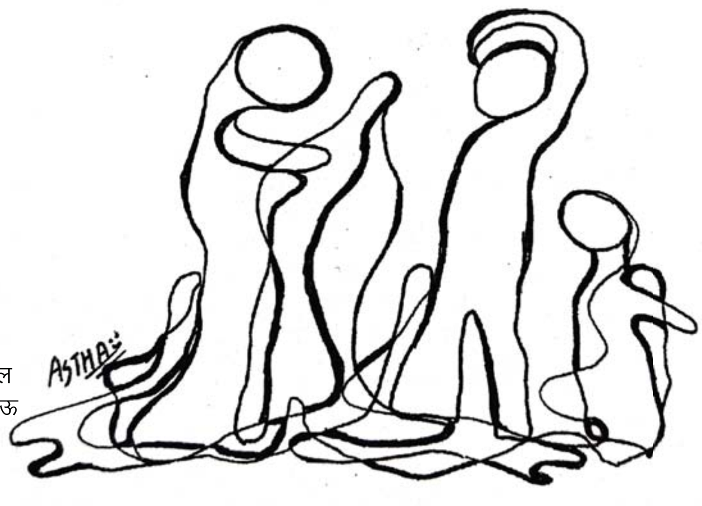

पत्रिका information.up.nic.in वेबसाइट पर उपलब्ध है।

❑ **एक प्रति का मूल्य** : पंद्रह रुपये
❑ **वार्षिक सदस्यता** : एक सौ अस्सी रुपये
❑ **द्विवार्षिक सदस्यता** : तीन सौ साठ रूपये
❑ **त्रैवार्षिक सदस्यता** : पांच सौ चालीस रुपये

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे मासिक पत्रिका 'उत्तर प्रदेश' और सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

—सम्पादक

आवर्तन

वर्तमान समय में आज पूरी दुनिया हमारी हथेलियों के बीच फंसे मोबाइल में सिमट कर रह गई है। प्रातःकालीन गुडमार्निंग से लेकर शुभरात्रि तक उसके बाद भी आज सभी का ज़्यादा से ज़्यादा समय मोबाइल पर ही बीतता है। यहां तक कि खाना बनाने की जरूरत नहीं। उंगलियां घुमाइये और 30 मिनट से लेकर 10 मिनट के अन्दर भोजन आपके सामने है। परिश्रम, संघर्ष से घबराए लोग जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शार्टकट अपना रहे हैं, कम समय में अधिक पैसा कमाने की होड़ में कुछ भी कर रहे हैं सही गलत के पैमाने बदल चुके हैं समाज में बढ़ती धन पिपासा नैतिक पतन की ओर से ले जा रही है। जीवन में थोड़ा सा संघर्ष आते ही हम परेशान होने लगते हैं, आराम की इतनी आदत जो पड़ गई हैं। पूरी दुनिया को जानने की कोशिश में हम अपने को समझना ही भूल जाते हैं, जबकि खुद को जानने से बड़ा कोई ज्ञान नहीं होता है। कठिन परिस्थितियों से उत्पन्न विचार हमें परेशान अवश्य करते है लेकिन परेशान होते रहना भी ज़रूरी है। संघर्ष पूर्ण ज़िन्दगी ही बेहतर ज़िदगी है जिसमें विकास की असीमित संभावनाएं होती हैं। बस इन संघर्षों के बीच खुद का निरीक्षण करते रहना है। किसी विद्वान ने कहा है, कि लोग सुख का त्याग कुछ पल के लिए कर सकते हैं, लेकिन दुःख का नहीं। मनुष्य इस तरह से बना है कि वह कभी भी किसी चीज से उतना आसक्त नहीं होता है, जितना कि अपने दुःख से होता है । इस दुःख से मुक्त होना ज़रूरी है और जिसने अपने दुःख का त्याग नहीं किया है, वह ज़िदगी में कुछ भी नहीं कर सकता है।"

समाज में रोज़ होने वाली घटनाएं हमें व्यथित तो करती हैं लेकिन खुद पर संतुलन बनाए रखना ही हमारी ज़िम्मेदारी है। महिलाओं के साथ होने वाली घटनाएं यह बताती हैं कि हमारे समाज में पुरूषों को भी सुसंस्कृत होने की ज़रूरत है। किसी भी स्त्री को उसकी मर्यादा में रहना चाहिये, यह तो बताया ही जाता है, यह भी बताना जरूरी है कि पुरूषों की भी मर्यादाएं होती हैं, जिनकी बुनियाद घर परिवार में बचपन से ही डाली जानी चाहिये स्त्री की अस्मिता और उसके मानवीय अधिकार समाज में उसे मनुष्य की अवधारणा के रूप में स्थापित करते हैं लेकिन समाज में रूढ़िवादी विचारों के चलते स्त्री को आज भी मनुष्य के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता। अलग–अलग तरीके से समाज में उसे अपनी भूमिकाओं के लिए तैयार किया जाता है। विगत दशकों के हिन्दी साहित्य में स्त्री लेखन का व्यापक प्रस्फुटन एक अनूठी ऐतिहासिक घटना है। यहां से लेखन एक सामाजिक सच्चाई और अस्मिता के संघर्ष की चुनौती के रूप में सामने आता है। करीब से देखें तो यह स्त्री के अपने नज़रिये से लेखन का नया पाठ है। हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श अस्मिता का वह आन्दोलन है जो हाशिए पर छूट गए नारी अस्तित्व को फिर से केन्द्र में लाने और उसकी मानवीय गरिमा को प्रतिष्ठित करने का अभियान है वर्तमान समय में रचा जा रहा साहित्य स्त्री की सामाजिक संरचना में दूसरे दर्ज़े पर रखने का मुखर विरोध और स्त्री को एक जीवन्त इकाई के रूप में स्वीकार करने का प्रयास है।

आगामी 15 अगस्त को हिन्दी के वरिष्ठतम् साहित्यकार डॉ. रामदरश मिश्र जी अपने जीवन काल के सौ वर्ष पूरे करके एक सौ एक वे वर्ष में प्रवेश कर जायेंगे। उत्तर प्रदेश परिवार की तरफ से उन्हें हार्दिक बधाई शुभकामनाएं रामदरश जी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले से आते हैं। उन्होंने हिन्दी साहित्य की हर विधा में लेखन किया। उनकी कविताएं, गजलें तथा उनके उपन्यास, कहानियां चर्चित रहे हैं। उन्हें उत्तर प्रदेश सरकार के हिन्दी संस्थान का शीर्ष पुरस्कार 'भारत भारती' भी दिया जा चुका है। यह हम सभी के लिए प्रसन्नता और हर्ष का विषय है कि अपने सौ वर्षों के दीर्घकालीन अनुभवों के साथ एक हिन्दी सेवी हमारे बीच उपस्थित है। अपने जीवनकाल में वे सदैव निर्विवाद रहे। उन्होंने सफलताओं के शिखर पर पहुंचने के लिए कभी कोई आसान रास्ता नहीं चुना। तभी तो वे कहते हैं–

बनाया है मैंने ये घर धीरे–धीरे,
खुले मेरे ख़्वाबों के पर धीरे–धीरे
किसी को गिराया न खुद को उछाला,
कटा ज़िन्दगी का सफर धीरे–धीरे

हमारे अंक आपको कैसे लग रहे हैं प्रतिक्रियाएं अवश्य भेजते रहिये।

कुमकुम शर्मा

मृत्यु के पहले नहीं मरना है

❑ विजय कुमार तिवारी

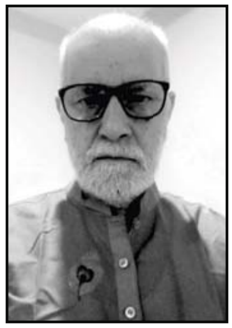

यह भ्रम पैदा करने वाली बात लग सकती है और अधिकांश लोग अपनी–अपनी असहमति जता सकते हैं। अपनी जगह वे लोग गलत नहीं हैं क्योंकि उन्होंने जो देखा है, जो सुना है उनके सारे अनुभव ऐसे ही हैं। दुःखद प्रसंग यही है,हमें शुरु से डराया गया है और जो समझाया गया वह हतोत्साहित करने वाला है। मृत्यु सत्य है। यह संसार मरणधर्मा है और एक न एक दिन सबको मरना है। मेरी भावना मात्र इतनी ही है,मृत्यु के पहले मत मरो। तय कर लो, मृत्यु के पहले नहीं मरना है। जिस क्षण हमने अपने भीतर ऐसी कोई चेतना जगा ली, ऐसा कोई संकल्प ले लिया, हमारी चिन्तन की सम्पूर्ण दिशा बदल जायेगी, उसके बाद वृद्धावस्था या मृत्यु का भय समाप्त हो जायेगा। यह प्रक्रिया अत्यन्त सहज है परन्तु सही चिन्तन को न समझ पाने के कारण स्थितियाँ जटिल बनी रहती हैं। दो–तीन बातें जन–सामान्य में हमेशा से प्रचलित हैं–एक तो यह कि हमारी मृत्यु तय है, दूसरी कि उसके पहले हम मर नहीं सकते और तीसरी कि हम स्वयं मृत्यु का भय पाले रहते हैं।

मनुष्य स्वयं के लिए भी जिज्ञासा का विषय रहा है, वह हमेशा अपने संसार की चिन्ता करता रहता है, अपने बाहरी लोकों को देखता है और भीतरी मनोजगत की गहरी पड़ताल करता है। बहुत प्रयास के बावजूद सत्य का छोटा अंश ही पकड़ पाता है, सम्पूर्ण सत्य उसके पल्ले नहीं पड़ता। हमारी चेतना ही हमें सृष्टि की अन्य रचनाओं से अलग करती है और उस प्राण–चेतना को समझने के लिए हमें अन्तर्यात्रा करनी पड़ती है। बाहर की खोज बहुत हद तक हमें उलझा देती है, निष्कर्ष सही नहीं होते जबकि अन्तर्यात्रा कभी भ्रमित नहीं करती। प्रबुद्धजनों, साधु–संतों और ग्रंथों ने यही मार्ग बताया है और जिसने भी चल कर देखा, उसे सफलता मिली। विश्वास पूर्वक कहना चाहता हूँ, आज के वीभत्स दौर में, जटिल परिस्थितियों में हर किसी को इसका आलम्बन लेना चाहिए। यह सरल मार्ग है और सफल होने की सुनिश्चितता है। सर्वाधिक सुखद है कि इस यात्रा में सुख और शान्ति है। इन्द्रियों के द्वारा अनुभूत यह संसार प्रकृति के मायावी रुप की झलक भर दे सकता है जबकि अन्तर्चेतना द्वारा उद्घाटित सत्य ही परम होता है।

मानव विकास एक सतत प्रक्रिया है। बुद्धि या बौद्धिक विकास एक सीमा को प्राप्त

करने के बाद रुक जाता है परंतु मन और शारीरिक क्रियाओं में विकास होता रहता है। साथ ही उसका मानसिक, भाषायी, संवेगात्मक, सामाजिक और चारित्रिक विकास कभी रुकता नहीं बल्कि निरंतर होता रहता है। यह विकास उसके विभिन्न आयु स्तरों पर भिन्न–भिन्न रूप में होता है। इन आयु स्तरों को ही मानव विकास की अवस्थाएं कहते हैं। भारतीय मनीषियों ने मानव विकास की अवस्थाओं को 7 खण्डों में विभाजित किया है। गर्भ धारण से लेकर मृत्यु पर्यन्त मनुष्य जीवन के विकास क्रम को इन्हीं 7 अवस्थाओं में समझा जा सकता है। गर्भाधान से जन्म लेने तक, लगभग 9 महीने के समय को गर्भावस्था के रुप में समझा जाता है। इस अवधि में क्रमिक विकास करते हुए भ्रूण नवजात शिशु के रुप में जन्म लेता है। जन्म से लेकर पाँच वर्ष तक वह शिशु शैशवावस्था में होता है। 5 से 12 वर्ष तक की अवस्था उसकी बाल्यावस्था होती है और उसके बाद 18 वर्ष तक वह किशोरावस्था में रहता है। तदुपरान्त लगभग 25 वर्ष तक उसकी युवावस्था मानी जाती है। 25 से 55 वर्ष तक वह प्रौढ़ नागरिक के रुप में रहता है और उसके बाद वृद्धावस्था में कदम रखता है। ध्यान देने योग्य है, आज का मनुष्य 55–60 वर्ष की अवस्था तक सक्रिय रहते हुए अपनी वृद्धावस्था को सुखद बनाये रखने की तैयारी कर सकता है, हर व्यक्ति को ऐसी तैयारी करनी चाहिए और बहुत लोग करते भी हैं तथा लम्बी आयु तक सुखद, स्वस्थ जीवन जीते हैं। वैसे हमारे सम्पूर्ण जीवन को बाल्यावस्था, युवावस्था, वयस्क या प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था के रुप में विभाजित किया गया है। इस तरह देखा जाए तो जीवन की तीन अवस्थाएं विकास क्रम में निर्माण से जुड़ी हैं, चौथेपन में निर्माण व विकास रुक जाता है या उसकी गति धीमी हो जाती है।

हर व्यक्ति के लिए शारीरिक शक्ति,मानसिक शक्ति और जाग्रत प्राण–चेतना महत्वपूर्ण है। हर स्थिति में उसे शारीरिक–मानसिक रुप से स्वस्थ रहना आवश्यक है। हम समाज में रहते हैं, ऐसे में हमारे पास पर्याप्त साधन–सुविधाएं हों, घर, वस्त्र व भोजन की कमी नहीं होनी चाहिए। हमारा मन बहुत चंचल है। उसकी चंचलता, रुग्णता प्रभावित करती है और दुर्गुणों से भरा मन व्यक्ति को कहीं का नहीं छोड़ता। उम्र और शरीर के पड़ाव को देखते हुए लोग कहते हैं, स्वीकार कर लो, रख चुके हो कदम वृद्धावस्था की डगर पर, परन्तु मन है कि मानने को तैयार ही नहीं है। उसकी अपनी ज़िद्द है, गहरी समझदारी के साथ धीरे से कहता है, सकारात्मक भाव–विचार के साथ सक्रिय रहा करो, कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। मन की बातों से ऊर्जा का अनुभव होता है,जीवन उत्साहित होता है और बहुत कुछ दिखाई देने लगता है जिसे पूरा करना है, जाने से पहले। सृष्टि के विधान को कोई बदल नहीं सकता, आये हैं तो जाना ही पड़ेगा। करना इतना ही है, ईश्वर ने जिस कार्य के लिए भेजा है, वह काम पूरा करना है और धरती धाम पर आना सार्थक करना है। स्वयं भी सुखी होना है, दुनिया को भी खुश करना है, तभी हमारा ईश्वर भी खुश होगा।

हर व्यक्ति के लिए शारीरिक शक्ति,मानसिक शक्ति और जाग्रत प्राण–चेतना महत्वपूर्ण है। हर स्थिति में उसे शारीरिक–मानसिक रुप से स्वस्थ रहना आवश्यक है। हम समाज में रहते हैं, ऐसे में हमारे पास पर्याप्त साधन–सुविधाएं हों, घर, वस्त्र व भोजन की कमी नहीं होनी चाहिए। हमारा मन बहुत चंचल है। उसकी चंचलता, रुग्णता प्रभावित करती है और दुर्गुणों से भरा मन व्यक्ति को कहीं का नहीं छोड़ता। उम्र और शरीर के पड़ाव को देखते हुए लोग कहते हैं, स्वीकार कर लो, रख चुके हो कदम वृद्धावस्था की डगर पर, परन्तु मन है कि मानने को तैयार ही नहीं है। उसकी अपनी ज़िद्द है, गहरी समझदारी के साथ धीरे से कहता है, सकारात्मक भाव–विचार के साथ सक्रिय रहा करो, कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

''शोधादर्श'' पत्रिका के वृद्धावस्था विशेषांक के मुखपृष्ठ पर माखन लाल चतुर्वेदी जी की तस्वीर के नीचे सारगर्भित पंक्ति लिखी हुई है, ''वृद्धावस्था जीवन का एक महत्वपूर्ण पर्व है, इसे पर्व की तरह जीने का अलग ही आनन्द है।'' रश्मि अग्रवाल जी अपने संपादकीय में लिखती हैं–"केवल मानव जीवन में ही कर्म और मौन दोनों साथ–साथ सन्निहित हैं। –वृद्धावस्था अभिशाप नहीं, पर बुढ़ापा आज भटक क्यों रहा है? जहाँ तक मेरा अनुभव है–संयुक्त परिवार का टूटना, बुजुर्गों को मिलता एकाकीपन, उदासी और कभी न समाप्त होने वाली प्रतीक्षा जैसे कारण हैं।" डॉ. रचना ग्रोवर की 'बाँध' कविता की पंक्तियाँ देखिए–कोई माता–पिता न रहे

अपने परिवार के बिना/अस्तित्व बूढ़ों और छोटों का साथ में चले। प्रेमचंद की 'बूढ़ी काकी' शोधादर्श पत्रिका के लिए धरोहर हैं। प्रेमचंद जी ने लिखा है, ''बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन है।'' बहुत मार्मिक कहानी है, हर किसी के हृदय को द्रवित कर दे। पहले अपने बूढ़ों को खिला लो, जरा प्यार से, नम्रता से समझाओ। उनके मनोविज्ञान को समझो। विश्वास द्विवेदी जी की कहानी 'बिखरते सपनों की टीस' की बातें सही हैं, 'रिटायरमेंट के बाद बच्चों का साथ, बच्चों के सहयोग का सपना देखना छोड़ देना चाहिए। स्वयं को इसी सांचे में ढालें कि किसी दूसरे की जरुरत ही महसूस न हो। अपनी वृद्धावस्था के लिए कुछ पूंजी जोड़कर अवश्य रखें। बच्चों के भविष्य के लिए सोचना जितना ज़रूरी है, खुद के भविष्य के लिए सोचना उतना ही ज़रूरी है।'' सब को पता है,सबके जीवन में एक दिन बुढ़ापा आयेगा। आज अपनी बोली, भाषा मत खराब करो,धैर्य रखो,सेवा करो और भगवान से डरो।

डॉ. पदुम लाल पुन्नालाल बख्शी जी का ''वृद्धावस्था'' लेख पढ़ते हुए आनंद के साथ मेरी प्राण–चेतना जाग रही है। ऐसा ही कुछ मैं भी सोचता रहता हूँ। कभी मैंने अपनी किसी कविता में लिखा था, बूढ़ा होना नियति ही नहीं, लोगों की आदत भी है। बख्शी जी से मैं पूरी तरह सहमत हूँ, वे लिखते हैं, ''यह सच है कि वृद्धावस्था में शारीरिक–शक्ति क्षीण होती जाती है, पर उसके कष्ट जितने कल्पित हैं,उतने यथार्थ नहीं हैं।'' उन्होंने बदलाव की पूरी प्रक्रिया और उसके लाभों की बेहतरीन चर्चा की है। वे लिखते हैं, ''वृद्धावस्था में सुख–दुःख की भावना परिवर्तित हो जाती है। तरुणावस्था में आडंबर अथवा प्रदर्शन की जो चाह रहती है वह वृद्धावस्था में नहीं रह जाती। न क्षणिक सुखों से वृद्धों को उल्लास होता है और न क्षणिक दुःखों से विषाद। न तो कोई सफलता उन्हें उत्तेजित करती है और न कोई असफलता हताश। तरुणावस्था में ज्ञान की वृद्धि होती है और वृद्धावस्था में ज्ञान की परीक्षा। वृद्धावस्था का सच्चा आनंद है आत्म–संतोष। जिन्हें भविष्य की चिंता है,वे तरुण ही हैं। बख्शी जी के इस कथन को समझने की जरुरत है, ''जीवन की संध्या अपने साथ एक अपूर्व श्री लाती है। ज्योति क्षीण हो जाती है, उन्माद नष्ट हो जाता है, मन में भाव की मृदु पवन बहती है, सहानुभूति की मृदु तरंगें उठती हैं, संसार हर्ष के मधुर कलरव से पूर्ण हो जाता है, चिर संचित स्नेह का दीप प्रज्ज्वलित होता है और मन के अनन्त नभोमंडल में उदीयमान नक्षत्रों की तरह कितनी ही मधुर स्मृतियाँ उदित होती हैं।'' संदेश स्पष्ट है कि वृद्धजनों का सम्मान हो, उन्हें घर–परिवार और समाज में उचित स्थान मिले। किसी भी परिस्थिति में हमारे वृद्ध उपेक्षित न हों। विश्वास कीजिए जिस घर में वृद्ध उपेक्षित, उदास और दुःखी होते हैं, वह घर कभी सुखी नहीं हो सकता। हम सभी को याद रखना चाहिए, कल हम भी वृद्ध होंगे, अपनी वृद्धावस्था को सुखी सुनिश्चित करने के लिए आज अपने वृद्ध लोगों को आदर और प्रेम से संभालिए।

जीवन की चारों अवस्थाओं पर चिन्तन करने की जरुरत है। जिसने हर अवस्था को ठीक से समझ लिया, उसके जीवन में असुविधा जैसी कोई बात होने वाली नहीं है। बाल्य और युवावस्था में बहुत चीजें जोश और उत्साह के साथ घटती रहती हैं, चाहे कोई कितना भी उपदेश दे, सिखाए–समझाए या दण्ड देकर कोशिश करे, इन अवस्थाओं में कुछ न कुछ अवहेलनाएं होती ही रहती है। बहुत कुछ रोक पाना सहज नहीं होता। हाँ, संस्कार हो तो बच्चा जन्म लेते ही सन्मार्ग की राह पकड लेता है परन्तु ऐसे लोग कम होते है। बाल्य और युवावस्था में माता–पिता, विद्यालय के शिक्षकों का दायित्व बढ़ जाता है।

जीवन की चारों अवस्थाओं पर चिन्तन करने की जरुरत है। जिसने हर अवस्था को ठीक से समझ लिया, उसके जीवन में असुविधा जैसी कोई बात होने वाली नहीं है। बाल्य और युवावस्था में बहुत चीजें जोश और उत्साह के साथ घटती रहती हैं, चाहे कोई कितना भी उपदेश दे, सिखाए–समझाए या दण्ड देकर कोशिश करे, इन अवस्थाओं में कुछ न कुछ अवहेलनाएं होती ही रहती हैं। बहुत कुछ रोक पाना सहज नहीं होता। हाँ, संस्कार हो तो बच्चा जन्म लेते ही सन्मार्ग की राह पकड़ लेता है परन्तु ऐसे लोग कम होते हैं। बाल्य और युवावस्था में माता–पिता, विद्यालय के शिक्षकों का दायित्व बढ़ जाता है। उन्हें अपने बच्चे पर कड़ी निगाह रखनी चाहिए और उसकी गतिविधियों को देखना, समझना चाहिए। इसका सहज उपाय है, उसकी संगति पर ध्यान दीजिए। संगति अच्छी है तो चिन्ता करने की जरुरत नहीं है।

उन्हें अपने बच्चे पर कड़ी निगाह रखनी चाहिए और उसकी गतिविधियों को देखना, समझना चाहिए। इसका सहज उपाय है, उसकी संगति पर ध्यान दीजिए। संगति अच्छी है तो चिन्ता करने की जरुरत नहीं है। माता–पिता जो संस्कार देना चाहते हैं, विश्वास पूर्वक स्वयं अपने जीवन में उतारें, बिना उपदेश दिए बच्चा वह सब सीख जायेगा। घर में नियमित अच्छी–अच्छी पुस्तकें व पत्रिकाएं स्वयं पढ़ें, बच्चा भी धीरे–धीरे पढ़ना सीख जायेगा। छोटी–छोटी गलतियों के लिए अधिक प्रताड़ित न करें बल्कि क्षमा का भाव दिखाएं।

यह विश्वास करें, हर बच्चा अपना संस्कार लेकर पैदा हुआ है और उसी के अनुसार वह संचालित होगा। संभव हो तो उसकी रुचियों को समझने की कोशिश करें और तदनुसार उसके जीवन को ढलने में सहयोग करें। बिल्कुल विपरीत दिशा हो तो भी यथा समझाएं–बुझाएं, हानि–लाभ बताएं परन्तु किसी भी परिस्थिति में कठोरता से व्यवहार न करें। जीवन का बहुत कुछ ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए। घर में सद्गुण, त्याग और प्रेम है तो बच्चा सहजता से इन गुणों को सीख लेता है। माता–पिता अपनी समस्याओं, संघर्षों को छिपाएं नहीं, बच्चे को भी परिचित होने दें। उसे ऐसा कभी नहीं लगे कि उससे छिपाया जाता है या उसका घर में महत्व नहीं है। हमेशा याद रखिए, घर का कर्णधार वही है और कल उसी का है।

प्रौढ़ावस्था में हर व्यक्ति सब कुछ समझने लगता है और अपने भविष्य की चिन्ता करता है। उसे बहुत कुछ उपदेश देने, समझाने की आवश्यकता नहीं है। हाँ, उसका सहयोग करना है, अच्छे कामों के प्रति अपनी प्रसन्नता दिखानी है और श्रेय देना चाहिए। जिस बच्चे की बाल्य, युवा और प्रौढ़ावस्था सम्हल गई है, विश्वास कीजिए उसकी वृद्धावस्था कभी खराब नहीं होगी। इसलिए हर व्यक्ति को अपनी पूर्व की तीनों अवस्थाओं में सजग रहकर तैयारी करनी चाहिए।

उम्र ढलने पर शरीर कमजोर होने लगता है, व्याधियाँ घेरने लगती हैं, इस सच्चाई को स्वीकार करें और घर में हाय–तौबा न मचाएं। अधिक अपेक्षा न करें और उपेक्षाओं को सहजता से मुस्करा कर स्वीकार करें। अपने सम्पूर्ण जीवन की अच्छाइयों, खुशियों को याद करें और कभी भी दुःखद स्थितियों को अपनी स्मृति में न लाएं। हर व्यक्ति के जीवन में सुख अधिक होता है और दुःख कम परन्तु हमारा स्वभाव बन जाता है, हम केवल दुःख को याद करते हैं। यदि हमें संतोष नहीं है तो निश्चित समझिए कोई हमें सुखी नहीं कर सकता।

इस दिशा में पहला प्रयास यह होना चाहिए कि हर व्यक्ति जीवन की सच्चाइयों को यथार्थतः समझ ले और अपने विचारों में स्पष्ट रहे। विचारों में ढुलमुल होना हानि का कारण होता है। उम्र ढलने के पहले से ही तैयारी शुरु कर दें। अपनी आवश्यकताएं, इच्छाएं और पराश्रित होने की भावनाएं कम करना शुरु कर दें। स्वयं को व्यस्त रखें और दूसरों के जीवन में दखलंदाजी बंद कर दें। अपनी जिह्वा और वाणी पर पूर्ण नियंत्रण रखें,आपकी आँखें बहिर्मुखी न हों, भीतर झाँके, भीतर देखें। यह साधना है। वृद्धावस्था के पूर्व से ही अपनी इन्द्रियों की साधना शुरु कर दें। हमेशा ध्यान रखें, कहीं आप लोगों के लिए अवरोध तो नहीं हैं। कोई अवरोध स्वीकार नहीं करता और एक न एक दिन मुक्ति पाना चाहता है। अवरोध के बजाए सहयोगी बने, शायद आपकी उपयोगिता बनी रहेगी।

उम्र ढलने पर शरीर कमजोर होने लगता है, व्याधियाँ घेरने लगती हैं, इस सच्चाई को स्वीकार करें और घर में हाय–तौबा न मचाएं। अधिक अपेक्षा न करें और उपेक्षाओं को सहजता से मुस्करा कर स्वीकार करें। अपने सम्पूर्ण जीवन की अच्छाइयों, खुशियों को याद करें और कभी भी दुखद स्थितियों को अपनी स्मृति में न लाएं। हर व्यक्ति के जीवन में सुख अधिक होता है और दुःख कम परन्तु हमारा स्वभाव बन जाता है, हम केवल दुःख को याद करते हैं। यदि हमें संतोष नहीं है तो निश्चित समझिए कोई हमें सुखी नहीं कर सकता। वृद्धावस्था आते–आते बहुत लोग वाचाल हो जाते हैं, उनके स्वभाव में लोलुपता आ जाती है, वे जीवन में बहुत सारे रसों के प्रति असन्तुष्टि का भाव रखते हैं और चाहते हैं कि येन–केन प्रकारेण प्राप्त कर लें। लजीज भोजन की चाह,खूब आदर–सम्मान की इच्छा, स्त्रियों के प्रति झुकाव, स्वभाव में रसिकता और धैर्यहीनता, स्त्री है तो पुरुषों के प्रति आसक्ति, सजने–सँवरने की भावना जैसी दमित भावनाएं सिर उठाती हैं। इन्हें अपने विचारों द्वारा, अपने संकल्पों द्वारा और दृढ़ इच्छाशक्ति से सम्हालना चाहिए। ऐसा नहीं होने पर

अपयश और जगहँसाई तो होती ही है, कई बार पीड़ित को प्रताड़ित भी होना पड़ जाता है।

किसी भी तरह वृद्धावस्था में डरने की जरुरत नहीं है,जरुरत है थोड़ा सम्हलने की, सावधान होने की और अधिक से अधिक अपनी शेष आयु को समाज, देश के हित में लगा देने की। यह भावना कभी भी उचित नहीं है कि वृद्धावस्था में सुख भोगना है या जीवन भर काम किया है, अब आराम करना है। कभी–कभी हमें उन लोगों के जीवन को देखना चाहिए जो मरते दम तक सेवा–धर्म में संलग्न रहकर दुनिया को बेहतर बनाने में लगे रहते हैं। ऐसे लोगों को समाज और देश–दुनिया के लोग कभी अकेला, लावारिस नहीं छोड़ते। उनके आसपास लोग खड़े रहते हैं, सेवा में तत्पर रहते हैं और बहुत से लोग जान देने के लिए तैयार रहते हैं। इसका एक ही कारण है, उन्होंने समाज, देश की चिन्ता की है, उनके लिए जीवन की हर अवस्था में देश है, समाज है और वे दूसरों की भलाई में लगे हैं। अक्सर कहा जाता है–जो अपनी सहायता करता है, दूसरों के लिए खड़ा होता है, उसके लिए ईश्वर खड़ा होता है।

अंत में कहना है, दुनिया में ऐसे भी लोग हुए हैं जिन्होंने वृद्धावस्था में बड़े–बड़े काम किए हैं और संसार में उन्हें लोग श्रद्धापूर्वक याद करते हैं। मेरा कोई दावा तो नहीं है परन्तु इतना अवश्य कहना चाहता हूँ, मैंने भी मन ही मन कोई तैयारी कर ली है। बचपन से लेकर सेवा–मुक्ति के दिन तक के संघर्षों, समस्याओं, चुनौतियों को मैंने भुला दिया। मैंने माना, आज जीवित हूँ, इसका मतलब मैं हारा नहीं हूँ बल्कि विजेता हूँ। इस भाव ने मुझमें बल का संचार किया और मैं कभी दुःख का रोना नहीं रोता। मैंने यह भी सोच लिया, नौकरी से मुक्त हुआ हूँ, अब मुझे वह सब करना चाहिए जिसमें मुझे सुकून मिले, अच्छा लगे। लेखन में मेरी रुचि थी। अपने प्रारम्भिक दौर में लेखन की अच्छी शुरुआत हुई थी परन्तु नौकरी की बाध्यता और घर–परिवार की जिम्मेदारियों के चलते लेखन–पाठन–पाठन बिल्कुल बंद हो गया था। सेवा–मुक्ति के बाद मैंने लैप–टाप सम्हाल लिया और सोचा––कम से कम फेसबुक का लेखक तो बन ही सकता हूँ। सुखद यह रहा, फेसबुक के मित्रों ने मुझे प्रोत्साहित किया और मेरे धार्मिक–आध्यात्मिक लेखों को पढ़ा। इसी बीच गुजरात की पत्रिका 'विश्वगाथा' ने अपने अप्रैल–मई–जून 2021 अंक में मेरी कहानी प्रकाशित कर दी। मुझे महसूस हुआ, मेरा लेखन खत्म नहीं हुआ है, भले ही विगत 30–32 वर्षों से साहित्य का लिखना–पढ़ना बंद है।

जब हम कोई दिशा चुनते हैं और ईमानदारी से श्रम करते हैं तो ईश्वर की मदद मिलनी शुरु हो जाती है। मेरी बातचीत प्रवासी भारतीय, कनाडा की टोरंटो यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर डॉ. हंसा दीप जी से हुई। ''उम्र के शिखर पर खड़े लोग'' उनके कहानी संग्रह से मेरे समीक्षा लेखन की शुरुआत मई 2021 में हुई। संयोग देखिए–उस संग्रह की कहानियाँ उम्र के शिखर यानी वृद्धावस्था की ओर बढ़ते लोगों की हैं, मैं भी सेवा–मुक्त हो चुका था और उन कहानियों ने मुझे बार–बार चमत्कृत किया। मई 2021 से आज अगस्त 2023 के बीच मैंने हिन्दी साहित्य की हर विधा की अब तक 140 से अधिक पुस्तकों की समीक्षाएं की हैं। सुखद है मेरी समीक्षाएं देश–विदेश की पत्रिकाओं में खूब छपती हैं। कुछ पत्रिकाओं ने मेरी दो–दो समीक्षाओं को अपने एक अंक में प्रकाशित भी किया है। अब तक समीक्षा की मेरी तीन पुस्तकें छप चुकी हैं और चौथी पुस्तक इस महीने के अंत तक आ जाने की उम्मीद है। मेरी आध्यात्मिक पुस्तक प्रकाशित हुई है। कहानी संग्रह और कविता संग्रह अभी हाल में ही छपे हैं। इस तरह 2022 से अब तक मेरी 6 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके अलावा मेरी रचनाएं कुछ साझा संकलनों में भी छपी हैं। अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, मॉरिशस, सिंगापुर, जापान की पत्रिकाओं ने मुझे प्रकाशित किया है और आज कह सकता हूँ कि मुझे अपनी अवस्था को लेकर कोई समस्या नहीं है। बस लगा रहता हूँ, देश–विदेश से लेखकों–पाठकों का आदर–स्नेह मिलता रहता है और स्वयं को रचनात्मक तौर पर व्यस्त रख पाता हूँ। अब तो मन का भाव यही है, अपने शेष जीवन में लेखन के माध्यम से हिन्दी साहित्य की जो भी सेवा कर सकूँ, अवश्य करूँ। अंत में इतना और जोड़ना चाहता हूँ, हर वृद्ध होते या उम्र के शिखर की ओर बढ़ते व्यक्ति को सावधानी के साथ स्वयं को उलझनों से बचाना चाहिए और लक्ष्य के साथ सकारात्मक भाव से सुखद जीवन जीना चाहिए। हाँ, अपने भगवान से भी जुड़े रहना चाहिए। ◆

पता : टाटा अरियाना हाऊसिंग, टावर–4,
फ्लैट–1002, पोस्ट–महालक्ष्मी विहार–751029, भुवनेश्वर,
उड़ीसा, भारत

मो. : 9102939190

रामोतार की फोटो

❑ डॉ. जया आनंद

''लो आय गई बड़के भैया की मोटर... राम–राम बड़के भैया! राम–राम चाची! बड़ी दीदी राम–राम!'' धारीदार पटरे का पैजामा, फुल शर्ट को बाहों में लपेटे, कंधे पर लाल रंग का अंगौछा डाले वह लगभग चार फुट पांच इंच का, रंग पक्का यह अदना सा व्यक्तित्व सबका अभिवादन कर रहा था। हां उस अदने से इंसान का नाम है राम अवतार पर जब लोग उसे बुलाते हैं तो वह रामोतार हो जाता है।

चाचा–चाची ने राम अवतार के अभिवादन का प्रत्युत्तर दिया। ''राम–राम रामोतार भैया !'' बड़ी दीदी भी कार से नीचे उतरते हुए मुस्कुराते हुए बोली ''राम–राम रामोतार''

''आप कितने दिनों बाद आईं बड़की दीदी'' बड़की दीदी को देखते ही रामोतार शुद्ध खड़ी बोली बोलने की भरपूर कोशिश करता।

''रामोतार भैया! बस पढ़ाई बहुत हो गई है... कैसे हो ?''

''बिल्कुल ठीक'' रामोतार के सांवले चेहरे पर झक सफेद दांत मुस्कुराते हुए प्रकट हो गए। रामोतार के उत्तर पर बड़की दीदी सोच में पड़ गई ''क्या सचमुच रामोतार बिल्कुल ठीक है। अपने घर में पांच भाई–बहनों में सबसे बड़ा पर कद में सबसे छोटा, दो छोटे भाई, दो छोटी बहनें, पिता का साया बहुत पहले ही सर से उठ चुका था। बूढ़ी होती हुई माँ, कमाने का ज़रिया बस बटाई पर खेती करना, गांव में छोटा सा कच्चा घर ज़िम्मेदारियों के पहाड़ के नीचे दबा रामोतार...और बिल्कुल ठीक!''

''बड़की दीदी लाइए हम बैग लेते हैं आपका।'' रामोतार की खनकती हुई बोली से बड़की दीदी जो अभी बहुत बड़ी नहीं थीं दसवीं में ही पढ़ती थी, मुस्कुरा दी।

''दीदी! छोटे चाचा, छोटी चाची देखेंगे कि बड़के चाचा आए गइन हैं मेरा मतलब कि आ गये हैं तो बड़े खुश हो जायेंगे। शाम तलक जब सब लोग के आने पर घर में रौनक लग जहियै मेरा मतलब रौनक लग जायेगी।'' रामोतार अपनी धुन में बोले जा रहा था। बोलना तो उसकी ख़ासियत है पूरा चलता–फिरता रेडियो जिससे लंबी–लंबी वार्ताएं अत्यंत ही रोचक प्रसंगों के साथ प्रसारित होती रहती हैं।

''बड़की दी! ई नल आप नहीं चला सकेंगी हम चलाते हैं'' रामोतार की फिर वही खड़ी

बोली बड़की दी हँस दी ''ठीक है भैया ! आप ही चला दो'' बड़की दीदी आँगन में लगे हैंडपंप से हांथ मुँह धोने लगी।

''दीदी ! आप फोटो लाई हो'' रामोतार ने चहक कर पूछा ''फोटो...बड़की दी भी सोचने लगी...'' फोटो तो मैं भूल गई। पिछले साल होली में गांव में सब लोग इकट्ठा हुए थे। दादी और छोटे चाचा–चाची तो वही गांव में रहते हैं, बाकी सारा परिवार बच्चे होली में अपने–अपने शहरों से पहुंच जाते। होली खेलने के बाद सब नहा धोकर अच्छे कपड़ों में कुर्सियों पर बैठ गए थे। कुर्सियों का इंतज़ाम रामोतार ने ही किया था। ''बीच वाली कुर्सी में दादी, ओके बगल वाली मा बड़के चाचा–चाची, दीदी इधर दाहिने तरफ वाली कुर्सी के किनारे खड़ी होंगी, परधान चाचा दादी के दूसरी तरफ और फिर मझंले चाचा–चाची के बगल मा छोटे डॉक्टर चाचा–चाची, उनके पीछे हम खड़े हो जाते हैं अउर बच्चा पार्टी आगै बैठ जावो। ''रामोतार सबको निर्देश दे रहा था। मुस्कुराते प्रफुल्ल चेहरे के साथ रील वाले हॉटशॉट कैमरे से फोटो खींची गई। गहरे सांवले रंग में चमकते हुए झक सफेद दातों के साथ रामोतार सबसे अधिक मुस्कुरा रहा था।

''दीदी ! आप फोटो लाई हो'' रामोतार ने चहक कर पूछा ''फोटो...बड़की दी भी सोचने लगी...'' फोटो तो मैं भूल गई। पिछले साल होली में गांव में सब लोग इकट्ठा हुए थे। दादी और छोटे चाचा–चाची तो वही गांव में रहते हैं, बाकी सारा परिवार बच्चे होली में अपने–अपने शहरों से पहुंच जाते। होली खेलने के बाद सब नहा धोकर अच्छे कपड़ों में कुर्सियों पर बैठ गए थे। कुर्सियों का इंतज़ाम रामोतार ने ही किया था। ''बीच वाली कुर्सी में दादी, ओके बगल वाली मा बड़के चाचा–चाची, दीदी इधर दाहिने तरफ वाली कुर्सी के किनारे खड़ी होंगी, परधान चाचा दादी के दूसरी तरफ और फिर मझंले चाचा–चाची के बगल मा छोटे डॉक्टर चाचा–चाची, उनके पीछे हम खड़े हो जाते हैं अउर बच्चा पार्टी आगै बैठ जावो।

''बड़की दी हमें यह वाली फोटो चाहिए'' अपनी खड़ी बोली में रामोतार ने बड़े ही आधिकारिक लहज़े से बात कही थी।

''हां रामोतार भैया ! अगली बार ज़रूर ले आऊंगी पर बड़की दीदी तो फोटो लाना भूल गई थी। इतनी सारी बातों में रामोतार की फोटो की बात तो मन के किसी हिस्से में समाकर गुम हो गई थी इसलिए इस बार गांव आते समय भूल गई। ''रामोतार भैया! अगली बार याद से लेकर आऊंगी''

''अबकी बार जरूर ले आइएगा दीदी! रामोतार के काले चमकते चेहरे पर सफेद दांत के साथ मुस्कान बिखर गई...पर आंखों में कहीं उदासी भी झलक रही थी। रामोतार सच पूछो तो सबकी उदासियां गठरी में उठाकर फेंक देने का काम करता। होली की शाम चाय सिधरी में (मिट्टी की बनी कोठारिया) में सब पीते और रामोतार चबूतरे पर खड़ा हो जाता। ''रामोतार! आज कौन किस्सा लेकर आए हो'' डॉक्टर चाचा ने चाय सुड़कते हुए पूछा ''उ दिन चाचा! गांव में जब परधानी की कुर्सी जीते रहे, एक जने बीस–बीस रुपए की माला पहनाई, दूसरे जने पचास–पचास की, तीसरे जने कहे हम तुमसे पीछे काहे रहे कोई कम तो हैं नहीं, उन्होंने सौ–सौ के नोट की माला पहनाई। हम तो चाचा का मुंह देखत रहे। चाचा नोटों की माला में फंसे गला कैसे खुजलाएं? हम सोचौ कि हम खुजलाय दें पर हमारा कद और हमारा हाथ चाचा की गर्दन तक कैसे पहुंचे! भगवान जी हमार कद बहुत ही बढ़िया बनाए हैं... ''रामोतार बोलते–बोलते हँस पड़ा शायद जब वो उदास होता है तो हंस पड़ता है...'' फिर भैया, एक जने बालूशाही और लड्डू लेकर चले आए और चाचा के मुंह में ठूँस दिए। अब चाचा ऊपर से मुस्कुरा रहे पर भीतर–भीतर गुस्सा कर रहे थे... 'हाथ में देना चाहिए तो मुंह में ठूँस दिए', बाद में हमका भी एक ठो लड्डू पकड़ाइन। हम चाहते थे बालूशाही खाना...उसके बाद चाचा के साथै भीड़ चलने लगी, आप सब रुतबा देखते... अइसा लागत रहै जैसे गांधी पिक्चर मा गांधी जी दांडी यात्रा करत रहे वैसे ही हम सब चाचा कै साथ एक साथ चलत रहैं। एक जने आ के चाचा का पैर पकड़ लिए, हम सोचे 'लो हो गया अब कल्याण। चाचा कहीं ज़ोर ना बोल दें कि पैर काहे पकड़े हो मुंह से बोलो जो बोलना है' पर हम देखे चाचा मुस्कुराते रहे। हम समझ गए कि चाचा अब पूरे नेता हुई गए हैं।... बड़की दीदी आप को समझ आ रहा है न!''

''हाँ–हाँ रामोतार भैया! आप अच्छी हिन्दी बोल रहे हो

फिर क्या हुआ, आगे बताओ !'' बड़की दीदी ने उत्सुकता से पूछा।

''अरे दीदी! आप बड़े मज़े लेकर सुन रही हैं'' रामोतार खुश हो गया था।

''रामोतार सुनाओ आगे की कहानी'' छोटी चाची मठरी खाते हुए बोलीं।

''....हां चाचा सब लोगन से घिरे–घिरे घर आए गये। दादी, चाची आरती का थाल लिए चाचा की आरती उतारे लगीं। हम तो चाची का चेहरा देखते रहे, अइसी सरमात रहीं जइसे कि छुईमुई सरमाए जात है मेरा मतलब कि चाची बहुत शरमा रही थीं। हमको तो इत्ती हँसी आई कि पूछो नहीं पर चाचा अपने में मस्त रहे। दादी चाचा को पान खिला दीं.... हां हम भूल गए रहे कि चाचा का वहां गांव में सब लोग माला पहनाय रहे, दादी तिलक लगाए रहीं और अब पान का बीड़ा से मुंह लाल...चाचा इत्ते जम रहे थे कि पूछो नहीं और कुछ सोचकर रामोतार मुस्कुराया।

''क्या हुआ रामोतार भैया! प्रिया बिटिया आंखों में चमक लिए बोली'' कछु नहीं छोटी बिटिया! हम तो बस चाचा के परधान बने पर जो जलवा देखे रहे वो तो गज़ब रहा, हमारा सीना चौड़ा हो गया कि हम ही कुछ बन गए हैं।'' रामोतार की परधान चाचा की गौरव गाथा चलती जा रही थी। रामोतार गाथा कहते हुए कभी मुस्कुराता, कभी ज़ोर से हंसता, कभी थोड़ा सोचता...सब के सब उसकी बातों को सुनते रहे। इतना रस रहता रामोतार की बातों में कि कोई टस से मस नहीं होता। रात हो रही थी,रामोतार को अचानक कुछ याद आ गया। ''भैया! अब दुसरे दिन सुनाइब''। रामोतार की गाथा का मध्यांतर आ गया था शायद !

रामोतार परधान चाचा की गौरव गाथा गाते हुए अपने घर पहुंच गया था। चूल्हे पर बूढ़ी मां मोटी–मोटी रोटियां सेंक रही थी, छोटी बहन प्याज़ काट रही थी, एक बहन सिल पर चटनी पीस रही थी, दोनों छोटे भाई भाई कच्चे आँगन में बिछी खटिया पर पसरे हुए थे। हंसता–मुस्कुराता रामोतार घर में बड़ा है कद का छोटा है तो क्या हुआय बड़प्पन की गंभीरता रामोतार के चेहरे पर घर पहुँचते ही उभर आती।

रामोतार के आगे खाने की थाली आ गई थी। दाल रोटी प्याज़ पानी... ''अम्मा! सब्जी काहे नहीं बनाई?'' रामोतार ने खाना देखकर मुँह सिकोड़ा ''बेटवा! आज हमारे पास पैसा रहे नाही और यह मधुरिया परधान भैया के बगिया गई नाही वहीं से तोड़ लाती कौनो सब्ज़ी, यही ख़ातिर दाल बनाय लिहैं''। अम्मा रोटी सेकते–सेकते बोली।

रामोतार ने दो मोटी–मोटी गुदारी रोटी खाई प्याज़ और दाल के साथ और वह भी आँगन में बिछी खाट पर अपने दोनों छोटे भाइयों के साथ लेट गया। आंगन के पास पेड़ से आच्छादित आकाश के झांकते हुए टुकड़े में टके हुए सितारों को रामोतार निहार रहा था कि उसकी नज़र आँगन के पास बने कमरे की कच्ची दीवार जिसे उसकी बहन मधुरिया ने नीचे गेरू और चूने से रंग के कुछ चित्रकारी की थी, पर चली गई '...हां ई जगह पर परधान चाचा, दादी बड़के भैया, बड़ी दीदी के परिवार की फोटो के लिए बहुत बढ़िया है, हमहुँ साथ खड़े हैं फोटो में। परधान चाचा हैं आख़िर हमरे, हमरा रुतबा भी बढ़ जाई...' रामोतार यही सब सोचता रहता।

गांव का रिवाज़ था कि होली के दिन परधान चाचा का परिवार और उनकी बिरादरी के लोग सुबह–सुबह नए कपड़े पहन कर एक दूसरे से होली मिलने जाते और मज़ाल है कि कोई भी उन पर रंग डाल दे। रामोतार भी हमेशा की तरह साथ चल दिया।

''कौनो हमरे ऊपर रंग ना डार्यो, हम चाचा के साथै हैं'' रामोतार पूरा रौब जमाते हुए बोलता।

''बड़की दीदी! आप आगे चलो, गुझिया, पापड़ खा लीजियेगा सोना चाची के यहां.....और दीदी! अब की बार फोटो जरूर लायो मेरा मत लाइएगा'' रामोतार बोलता जा रहा था। बड़की दीदी हंसकर रह गई। रामोतार अपने अभावों को किनारे करता हुआ उन सब की खुशी में शामिल था।

सुबह होली मिलन होने के बाद पहले की भांति सब ने पुराने कपड़े पहने और आंगन में जमकर होली होने लगी। बड़ी दीदी पूरे जोश से बाल्टी में रंग भर–भर कर सब पर डालती जा रही थी। ''रामोतार भैया! जरा बाल्टी भरो'' बड़की दीदी ने कहा।

हाँ...हाँ दीदी ''रामोतार हंसते हुए आंगन में लगा

हैंडपंप चलाने लगा। छोटे चाचा ने आकर रामोतार पर ही रंग उड़ेल दिया।'' अरे नहीं भैया! हम का नाही भिगायो ''रामोतार मुस्कुराते हुए बोला। रामोतार की दोनों छोटी बहनें मधुरिया और किरनिया और दोनों छोटे भाई जो रामोतार से खासे लंबे थे, सब आंगन में एक कोने में खड़े परधान चाचा के घर की होली देख रहे थे। रामोतार सबको देख–देख कर खुश हो रहा था।...रामोतार हमेशा से ऐसा ही रहा था खुद कभी नहीं खेलता पर सबको रंग खेलता देख खुश होता...शायद दूसरों की खुशी में ही वह खुश हो लेता है। ''मधुरिया किरनिया! अब घर चलो'' रामोतार में बड़े भाई का अधिकारिक भाव जाग गया था और उसे अकेली अम्मा की भी चिंता है। मधुरिया, किरनिया घर चली गई, दोनों छोटे भाई परधान चाचा के घर में गाय बछड़ों का प्रबंध करने बग्घर चले गए।

हाँ...हाँ दीदी ''रामोतार हंसते हुए आंगन में लगा हैंडपंप चलाने लगा। छोटे चाचा ने आकर रामोतार पर ही रंग उड़ेल दिया।'' अरे नहीं भैया! हम का नाही भिगायो ''रामोतार मुस्कुराते हुए बोला। रामोतार की दोनों छोटी बहनें मधुरिया और किरनिया और दोनों छोटे भाई जो रामोतार से ख़ासे लंबे थे, सब आंगन में एक कोने में खड़े परधान चाचा के घर की होली देख रहे थे। रामोतार सबको देख–देख कर खुश हो रहा था।... रामोतार हमेशा से ऐसा ही रहा था खुद कभी नहीं खेलता पर सबको रंग खेलता देख खुश होता...शायद दूसरों की खुशी में ही वह खुश हो लेता है। ''मधुरिया किरनिया! अब घर चलो'' रामोतार में बड़े भाई का अधिकारिक भाव जाग गया था और उसे अकेली अम्मा की भी चिंता है।

परधान चाचाजी का परिवार होली खेलने के बाद नहा धोकर तैयार हो गया था। आंगन में रामोतार ने फिर से कुर्सियाँ सजा दी थीं पर अब की बार छोटे भैया, छोटी दीदी नहीं आई थीं बोर्ड परीक्षा के कारण, इस बार भी फोटो खींची गई। रामोतार भी था फोटो में बड़की दीदी के बगल में ही खड़ा था। फोटो खींचने के बाद रामोतार बोला ''दीदी! हमें पिछले साल वाली फोटो चाहिए उस फोटो में सब हैं'' रामोतार खड़ी बोली पर आ गया था जैसे दीदी से बात करते हुए हमेशा से करता था।

''भैया! अबकी बार नहीं भूलेंगे पर आज शाम आप कौन सा किस्सा सुनाने वाले हो।

''आज शाम का सुनिहो मेरा मतलब शाम को सुनिएगा बड़की दी से रामोतार देहाती भाषा में बोलते हुए अचकचा गया।

शाम सात बजे आंगन के पास बनी सिधरी (मकान का कच्चा भाग) में सब इकट्ठा हो गए। चाय की चुस्की के साथ रामोतार की कहानी सुनने के लिए सब उत्सुक थे।

''रामोतार! आज कौन सा किस्सा?'' छोटे चाचा बोले

''भैया! आज तो अबहैं का किस्सा है''

''कौन सा'' छोटे चाचा बोले ''अरे बड़के चाचा का... आज गांव के रामलीला मैदान में जो भाषण दिए रहें वही... सब लकदक हुई के सुन रहे धे। हम भी सुन रहे थे। पहले तो बड़के चाचा कविता बड़े जोश में बोले तो हमको थोड़ा बहुत समझ आया पर लगता रहे कि बहुते बढ़िया कविता बोल रहे हैं।

''रामोतार! बताओ भई कैसे बोल रहे थे हम'' बड़के चाचा हँसते हुए पूछने लगे।

रामोतार हाव भाव प्रदर्शित करते हुए पूरा अभिनय दिखाता रहा। ''फिर क्या हुआ रामोतार भैया!'' बड़की दीदी की आँखें चमक रही थीं।

''फिर सब जन ज़ोर से ताली बजाए। बड़के चाचा बिल्कुल अटल जी लग रहे थे और भाषण भी अटल जी जैसा देते रहे'' रामोतार अटल जी का अभिनय कर के बताने लगा''... ये बात नई है... ''सब ज़ोर से हंस पड़े। और उसके बाद बड़के चाचा एक गीत गाए 'ऋषि मुनि राजा प्रजा...' ऐसे रहै कछु बहुते बढ़िया गायिन। हम तो बड़के चाचा के बगल में खड़े हुई गए। सब गांव वाले हमको भी का देखै लगे'' बोलते हुए राम अवतार का चेहरा मुस्कुराते हुए लाल होने लगा।

राम अवतार के किस्से सब मज़े लेकर सुनते रहते। रामोतार सबको हंसाता रहता पर अपने घर पहुंचते ही उसके चेहरे पर गंभीरता आड़ लिए खड़ी हो जाती। दोनों बहनों की शादी, दोनों भाइयों की देखभाल, बूढ़ी होती हुई अम्मा की चिंता, घर बसर करने की बेचैनी,... परधान चाचा के खेत से

बटाई का पैसा काफी नहीं पड़ता है, रमेश चाचा के खेत का भी काम ले लेते तो कुछ बात बनेगी...इन सबके बीच में अपने लिए कुछ सोचता ही नहीं।

''भैया! आज पूरी सब्ज़ी बना रहे, खाय लो'' रामोतार की अम्मा खाना परसते हुए बोलीं।

''अम्मा! परधान चाचा के यहां खाय लिहै, दादी खिलाये थी, बहुते स्वादिष्ट खाना था'' कहते हुए रामोतार पानी से हाथ मुंह धो कर आंगन में बिछी खाट पर पसर गया। परधान चाचा का परिवार उसके लिए बड़ी नियामत के समान था। उस परिवार की खुशी में खुश और उसके दुःख में दुःखी। लेटे हुए रामोतार की नज़र फिर सामने वाली खाली दीवार पर पड़ी, यहाँ परधान चाचा, दादी, बड़की दीदी सब की फोटो लग जाए बहुत बढ़िया लगेगा, मधुरिया की शादी में फोटो की वजह से हमरा रुतबा बढ़ जाब फिर अपनी भी शादी करेंगे, हमारी औरत भी फोटो देख कर खुश होगी कि उसका आदमी परधान चाचा के यहां काम करत है'' रामोतार के चेहरे पर लजाई सी मुस्कान बिखर गई थी। कद का जितना छोटा था रामोतार सपने भी उसी कदके थे। अपने सपनों की दुनिया बनाते–बनाते रामोतार की आंख लग गई।

अगले दिन बड़के चाचा, डॉक्टर चाचा अपने–अपने काम पर होली की छुट्टी खत्म होते ही लखनऊ जाने लगे। ''बड़की दीदी! अब की बार आयो तो फोटो याद से ले आयो मतलब ले आइएगा'' फिर आधी देहाती आधी खड़ी बोली बोलते हुए रामोतार सब के पैर छूने लगा।

''हां रामोतार भैया! अबकी बार नहीं भूलेंगे'' बड़ी दीदी मुस्कुरा दीं।

अगले दो साल बड़की दीदी गांव आई ही नहीं, पढ़ाई बोर्ड परीक्षा में व्यस्त थी और तीसरे साल जब आई तो रामोतार की फोटो का ध्यान ही नहीं रहा। उस फोटो की नेगेटिव धुलवाने का किसी को ख़याल ही नहीं आता और रामोतार की फोटो का सपना धरा का धरा रह जाता।

''दीदी अबकी बार आयो मतलब आइएगा तो फोटो ले आइएगा'' रामोतार याद दिलाता रहता और साथ ही अपने किस्सों के पिटारे से कोई ना कोई नया किस्सा सजीव प्रसारण के साथ सुना कर सबका मन मोह लेता और रात फिर गहराते सूनेपन के साथ बिता देता।

अपनी बहन मधुरिया की शादी रामोतार ने पास के गांव के दुकानदार से करवा दी पर परधान चाचा के परिवार के साथ वाला फोटो का रुतबा वह तो अधूरा ही रह गया था।

बड़की दीदी की शादी तय हो गई थी। गांव में रामोतार अपने छोटे भाइयों के साथ लखनऊ आ गया था। बड़की दी शादी की रस्मों रिवाज़ में व्यस्त थीं। रामोतार को देख कर मुस्कुराते हुए बोलीं ''रामोतार भैया! आप शादी के कामकाज संभालो'' रामोतार ने मुस्कुराते हुए हां में सिर हिलाया। फोटो की बात अभी भी भूला नहीं था। रामोतार अपने दोनों भाइयों के साथ दौड़–दौड़ कर काम करता ''रामोतार भैया पानी ला दो, रामोतार! बिस्तर बिछा देना, रामोतार! चावल की बोरी रखवा दो, रामोतार हलवाई के पास सब्ज़ी की बोरी दे आओ...'' रामोतार हंसते–हंसते काम करता जाता। दोनों छोटे भाई भी उसके साथ लगे रहते। धूमधाम से शादी हुई। रामोतार अपने पटरे वाले पजामे की जगह सफेद पजामे बुशर्ट में सजा धजा काम करता रहा और साथ ही सबको हंसाता भी रहता।

बड़की दी विदा होकर ससुराल चली गई। गांव में होली मनती रही पर बड़की अपने घर गृहस्थी के बीच गांव नहीं पहुंच पाई। दस साल बीत गए। गांव के परधान चाचा के मंदिर का सौ साल हो रहा था। परिवार के सब लोग पहुंच रहे थे। बड़की दीदी को गांव जाने की बहुत ललक थी। अवसर ने गांव जाने की ललक में वृद्धि करदी थी। बड़की दीदी अपने बच्चे पति समेत गांव पहुंचकर भावविभोर हो रही थीं। मंदिर में स्थापित बारह ज्योतिर्लिंग, राधा–कृष्ण सभी देवी–देवता थे। घर का लंबा चौड़ा आंगन, आंगन में लगा अनार का पेड़ और वह मकान का वह कच्चा भाग सिधरी अब नहीं थी टूट चुकी थी सिधरी की याद आते ही रामोतार का चेहरा आंखों के सामने घूम गया।

शादी के लगभग दस दिन बाद ही बड़ी दीदी नई नवेली दुल्हन के रूप में अपने पति के साथ गांव पहुंची थीं। नए–नए जीजा जी को सब ने होली पर खूब रंगा था। रामोतार पास खड़े होकर हैंड पाइप चलाते पानी की बाल्टी भरे जा रहा था। शाम को सिधरी में सब बैठ गए थे चाय की चुस्की के साथ और रामोतार पूरे जोश के साथ किस्सा सुनाने लग गया बड़की दीदी की शादी का... ''भारी

इंतजाम किए रहैं बड़के चाचा कि का बताएं ...कौनो खाने की कमी ना रही, गुलाब जामुन, रसगुल्ला, रस मलाई, दोसा, पानी बतशा... हम तो खूब खाएं और जय माल का स्टेज तो बहुत बढ़िया रहा। बड़की चाची छोटी चाची सब गाना गाए रहीं तो लगे हम कौनो पिक्चर देख रहैं और बड़की दीदी–जीजाजी उसके हीरो हीरोइन हैं एकदम राम–सीता की जोड़ी। बारात में एक मोटे थे, वो ऐसा नाच रहे थे कि का बताइ, एक ज़मीन में लोट गए। हम सोचे काहे इतना बढ़िया कपड़ा पहने की जरूरत है जब नीचे लोटे का है। शादी का पंडित गायत्री मंत्र बोल रहे थे। वो सब जन का डांट दिए कि अभी गाना मत गाओ मंत्र सुनो ...हमें तो छोटे चाचा का बियाह याद आ गया जब शादी में कोई पंडित जी का मंत्र नहीं सुन रहा था बस अपना अंताक्षरी खेल रहे थे।''

''रामोतार अब तुम्हारी भी शादी भी होनी चाहिए'' छोटे चाचा बोले। ''चाचा! पहले मधुरिया, चंदर को ब्याह होइ जाए तब सोचिबै...कौनो लड़की मिलत नाहीं'' रामोतार शरमा गया। ''रामोतार बिहार से भगा के ले आए कोई लड़की तुमरे लिए'' छोटे चाचा बोले। ''नहीं मिलेगी तब चाचा! भगाए लिहो'' रामोतार ज़ोर से हंस पड़ा था।

बड़की दीदी के सामने रामोतार का पूरा चलचित्र खिंच गया। रामोतार की एक–एक बात, उसकी भाव–भंगिमा याद कर बड़की दी मुस्कुरा दी।

''बड़की दीदी कैसी हैं आप?'' रामोतार की दोनों छोटी बहनें सामने खड़ी थीं।

''अरे किरनिया, मधुरिया कैसी हो ? शादी हो गई दोनों की''!''हां बिटिया अब सब ज़िम्मेदारी निभ जाए ऐसे सोचत हैं'' रामोतार की अम्मा आ गई थीं।

अभी तक रामोतार कहीं दिखाई नहीं पड़ रहा था। ''अम्मा! रामोतार किधर है?... और उसकी शादी...'' बड़की दीदी का प्रश्न अधूरा ही रह गया। ''बिटिया! सब छोट भाई–बहन की सादी रामोतार कर दिहिन पर आपन...इनके कद की कौनो मिलते नाहीं, का करी।

बड़की दीदी सोच में पड़ गई कुछ बोलते ही नहीं बना। रामोतार कुछ देर बाद आया पर चेहरे पर वो रौनक जो पहले हुआ करती थी अब नदारद थी।

''कैसी हो बड़की दीदी? आप बहुत साल बाद आई'' रामोतार ने मुस्कुराते हुए औपचारिकता निभाई। ''हाँ भैया! घर गृहस्थी,.....बच्चों! यह रामोतार भैया, बहुत बढ़िया किस्से सुनाते हैं'' बड़की दीदी ने रामोतार को उत्तर देते हुए अपने बच्चों से परिचय करवाया।

मंदिर का पूजा पाठ, गांव की दावत का कार्यक्रम चला, भजन कीर्तन भी हुआ, गांव की बगिया, फुलवारी की घुमाई भी हुई... बस नहीं हुआ तो दादी से मिलना (दादी अब नहीं रही थी) और रामोतार के किस्से। सिधरी टूट चुकी थी और शायद रामोतार के किस्सों के लिए कोई मंच भी अब नहीं बचा था। सुबह सब के जाने की अफरा–तफरी मच गई। रामोतार गाड़ी में सब का सामान चढ़ा रहा था। सारे लोग गाड़ी में बैठ गए थे। अब गांव में छोटे चाचा भी नहीं रहते वह भी लखनऊ आ गए। रामोतार अकेला खड़ा था नीचे मुस्कुरा रहा था धीरे से बोला'' दीदी ! आप फिर आयो हो मेरा मतलब आइएगा ''इस बार उसने फोटो की बात नहीं कही पर फोटो की बात भूला तो रामोतार भी नहीं और बड़की दीदी के भी मन के कोने में रामोतार की फोटो बसी थी पर न रामोतार बोला न बड़की दीदी कुछ बोल पाई। अब तो मोबाइल फोटो का ज़माना आ गया था। सब डिजिटल पर उस फोटो की तो बात ही अलग थी। पूरा परिवार था उसमें रामोतार के साथ, रामोतार के रुतबे की बात थी। अब तो कई लोग इस दुनिया से कूच कर चुके हैं और समय के साथ फोटो भी पुरानी पड़ चुकी है और रामोतार का रुतबा भी। रामोतार की वह कच्ची दीवार अब भी सूनी है वहां कोई फोटो नहीं और वह सूनापन उसके जीवन में भी। वह बिल्कुल अकेला है।

बड़की दी ने चलते हुए पाँच सौ का नोट उसे थमा दिया ''अरे नहीं दीदी !'' रामोतार सकुचा गया।

बड़की दीदी ने ज़बरदस्ती उसके हाथ में नोट पकड़ाया और मुस्कुरा दी आखिर कुछ भी तो नहीं दे पाई रामोतार को, एक फोटो तक भी नहीं जिससे वो अपने रुतबे की बाट जोहता रह गया...किस्से सुनाने वाले रामोतार के जीवन का किस्सा तो अधूरा था पर रामोतार अब भी मुस्कुरा रहा था। ◆

पता : सी–204, इनटाप हाइट्स, सेक्टर–19, अरौली, नवी मुम्बई–400708

मो. : 9769643984

टूटे पंखों वाली चिड़िया

❑ नीरज नीर

अजब सी कशमकश रही है उम्र भर,
जिस्म को बचाया तो रूह मर गयी।

ज़िंदगी के निर्जन रास्तों पर मिलने वाले दोराहे चयन का संकट पैदा कर देते हैं। अफरोज़ा भी ऐसे ही दोराहे पर रास्ता तलाशती खड़ी थी। वह समझ नहीं पा रही थी कि उसे क्या करना चाहिए। आमिर और जेबा ने उससे बहुत उम्मीद और प्यार से कहा था "आपा! अब्बू आपको याद कर रहे हैं। वे अस्पताल में भर्ती हैं। उनकी हालत अच्छी नहीं है। आप आ जाओ आपा। आप आ जाओगी तो सब ठीक हो जाएगा".

पर वह कैसे जा सकती है? किस रिश्ते से, किस हैसियत से अब वह जाए?

क्या उनके बीच कुछ भी ऐसा बचा था, जिसकी डोर पकड़ कर वह दो कदम भी चल सके? इस रिश्ते ने उसकी रूह पर ऐसी खरोंचे दी थीं, जो उसके अस्तित्व को निरंतर लहूलुहान कर रही थी।

लेकिन आमिर और जेबा की उम्मीद का वह क्या करे? आफताब ने जो किया, उसमें उन बच्चों का दोष है?

एक अजीब सी उधेड़बुन का झंझावात उसके मन में चल रहा था। वह कोई भी निर्णय नहीं ले पा रही थी। कशमकश का एक पहाड़ उसके सामने आ खडा हो रहा था, जिसे पार करने में वह लड़खड़ा कर गिरी जा रही थी। एक मन कर रहा था कि उसे जाना चाहिए लेकिन अगले ही पल कटु स्मृतियों के काले घेरे आकर मन में डेरा डाल देते।

"क्यों रुख़साना नहीं आई?" अफरोज़ा ने दिल पर पत्थर रखकर रुख़साना का नाम लेते हुए आमिर से पूछा था।

"नहीं आपा, उनको भी ख़बर किया था, उन्होंने साफ मना कर दिया है कि कोरोना के समय वह मुंबई से दिल्ली नहीं आ सकती।"

अफरोजा का मन खराब हो गया। वह क्या करे, उसे समझ नहीं आ रहा था?

आफताब आख़िर उसे क्यों याद कर रहे हैं, किस रिश्ते से याद कर रहे हैं? आज जब वे अस्पताल में हैं तब उन्हें याद आई, अच्छे समय में कभी याद नहीं आई। याद भला आए ही क्यों? एक पराया मर्द परायी स्त्री को याद भी भला क्यों करे? इस तरह के प्रश्नों की शृंखला एक के बाद सागर की लहरों की तरह आकर अफरोज़ा के मन से टकराती।

लेकिन कुछ तो बात होगी, जो उस ज़ालिम ने मुझे याद किया। ऐसे ही तो कोई किसी को याद नहीं करता। क्या पता, मुझसे माफी माँगना चाहते हों। अपनी गलतियों पर अब पछतावा हो रहा हो। आख़िर यह तो सच ही है कि रुखसाना ने उन्हें खुश नहीं रखा है। पछतावा तो होना ही था। जैसा बोया, वैसा काटा। यह सोचकर उसके मन को थोड़ी तसल्ली सी मिली।

अफरोज़ा का मन कहीं एक जगह नहीं टिक रहा था। कभी आफताब तो कभी आमिर और जोया का चेहरा सामने आ जाता। उसे आमिर की कही बात याद आती कि अब्बू आपको याद कर रहे हैं .. आप आ जाओगी तो सब ठीक हो जाएगा।

अब्बू यानी आफताब अंजुम मूलतः पटना से थे। छह फुट ऊँचे, मजबूत काठी के गौरवर्णी आफताब अंजुम ने अपनी प्रखर व्यापारी बुद्धि के बल पर पटना में बड़ा धन और नाम कमाया था, लेकिन व्यापार संयुक्त परिवार का था, उसमें भाइयों की हिस्सेदारी थी। बाद में चलकर भाइयों से जब रोज़ की चख–चख होने लगी तो उन्होंने पटना छोड़ कर दिल्ली का रूख कर लिया था। उन्हें अपनी बुद्धि और मेहनत पर भरोसा था। उन्हें विश्वास था कि वहाँ भी वे इच्छित सफलता पा लेंगे और ऐसा हुआ भी। वहाँ भी उन्होंने समय के साथ व्यवसाय में एक अच्छा मुकाम बनाया। लेकिन दिल्ली की ज़मीन पटना से कड़ी निकली थी। वहाँ कुछ वर्ष संघर्ष के बीते और इन्हीं संघर्ष के दिनों ने उनसे एक बड़ी कुर्बानी ले ली थी। अपनी बीवी आएशा को वे मौत के हाथों हार गए। इसके लिए आफताब स्वयं को दोषी मानते रहे। उन्हें लगता था कि अगर वे आएशा का पूरा ख़याल रख पाते तो शायद उसकी मृत्यु नहीं होती। लेकिन संघर्ष के उन दिनों में, वे ऐसा कर नहीं पाये थे।

आएशा की मौत के वक्त दोनों बच्चे आमिर और ज़ोया महज क्रमशः चौदह और बारह वर्ष के थे। ऐसे में, आफताब के लिए दिल्ली में व्यवसाय संभालना और बच्चों की देखभाल, दोनों एक साथ करना बहुत मुश्किल हो रहा था। ऐसे ही ज़िंदगी के कठिन सफर में अफरोज़ा हमसफर बनकर आयी थी।

अफरोज़ा एक संभ्रांत खानदान की लड़की थी और दिल्ली में पढ़ी लिखी थी। लेकिन हालात कब किसके बदल जाएँ कोई नहीं जानता। पुराने बने हुए बड़े घर समय के साथ सड़क से नीचे हो जाते हैं तो उनमें सड़क का पानी भरने लगता है। ऐसे ही बदले हुए हालात से गुज़र रहे अफरोज़ा के खानदान वालों के पास जब आफताब अंजुम जैसे प्रतिष्ठित व्यवसायी का रिश्ता आया तो उन्होंने फौरन से पेश्तर हाँ कर दिया।

दिल्ली के जामिया इलाके में पली बढ़ी अफरोजा में संस्कार और शिक्षा का बेहतर तालमेल था। यद्यपि कि आफताब और अफरोज़ा की उम्र में काफी अंतर था। लेकिन शादी के बाद अफरोज़ा ने आफताब एवं उनके बच्चों को दिल से अपनाया। अफरोज़ा जवान थी और सुंदर भी। आफताब उसके हुस्न पर मर मिटे थे। अफरोज़ा ने भी आफताब के आँगन में मुहब्बत की बारिश लुटाने में कोई कमी नहीं की थी। हालांकि आमिर और ज़ोया, अफरोज़ा को अम्मी के रूप में नहीं स्वीकार कर पाए एवं अफरोज़ा के प्रति उनका व्यवहार शुरुआती दिनों में एक अवांछित व्यक्ति का ही रहा। लेकिन कहते हैं कि प्यार से पत्थर को भी पिघलाया जा सकता है। अफरोज़ा ने भी अपने निःस्वार्थ प्रेम की बदौलत आमिर एवं ज़ोया के दिल जीत लिए थे, लेकिन उनकी अम्मी के रूप में नहीं बल्कि उनकी आपा के रूप में। बच्चों ने अफरोज़ा को आपा मान लिया और इस नए रिश्ते से उसे कोई दिक्कत भी नहीं थी।

बाद के दिनों में बच्चों के प्रति अफरोज़ा का प्रेम और भी बढ़ गया। डॉक्टरों ने बताया था कि अफरोज़ा कभी माँ नहीं बन सकती थी। उसने आमिर एवं ज़ोया में ही अपने मातृत्व की पूर्णता देखी थी। उन्हें अपने बच्चों सा ही प्यार–दुलार दिया था। अपनी कमी को ही अफरोज़ा ने अपनी मजबूती बना लिया था।

अफरोज़ा ने घर परिवार की ज़िम्मेदारी बहुत सफलतापूर्वक उठा ली थी। बच्चों की छोटी सी छोटी ज़रूरतों का ध्यान रखती। उनकी पढ़ाई–लिखाई को लेकर भी सदा सचेष्ट रहती। परिवार की ज़िम्मेवारियों से मुक्त

आफताब पूरी तरह व्यवसाय में रम गए थे। उनकी मेहनत और लगन ने परिणाम भी दिखाया एवं व्यवसाय में उन्हें आशातीत सफलता मिलने लगी। दिल्ली के बाद उन्होंने मुंबई में भी अपने व्यवसाय का विस्तार किया। जिसके कारण उनका मुंबई जाना–आना अक्सर लगा रहता था। वे मेहनती थे एवं व्यवसाय के हुनर में माहिर भी। मुंबई में उनका काम अच्छा चल निकला। अफरोज़ा अपने शौहर की खुशी में खुश थी, उसकी तरक्की पर गौरवान्वित थी। वह अपने शौहर और परिवार की खुशी के लिए दुआएं माँगती। उसे अपने लिए कुछ भी नहीं चाहिए था। वह खुदा की शुक्रगुज़ार थी कि उसे आफताब का साथ मिला था। अच्छे दिन थे सो तेजी से बीते। शादी के बाद सात साल पंख लगाकर उड़ गए थे। अब दोनों बच्चे जवानी की दहलीज़ पर कदम रख चुके थे। अफरोज़ा ने कभी इस बात की शिकायत नहीं की कि उसे जितना वक्त और प्यार अपेक्षित था उतना नहीं मिला। लेकिन प्यार की यही अनपेक्षा शायद उसकी भूल साबित हुई। प्यार की अपेक्षा आफताब से कोई और ही कर बैठी थी। मुंबई में व्यवसाय के दौरान उनकी मुलाकात रुखसाना से हुई थी। रुखसाना उनके ही ऑफिस में काम करने आई थी और आफताब से दिल लगा बैठी।

आफताब जीवन का अर्धशतक लगा चुके थे। ऐसे में जवान देह की गंध ने उन्हें शीघ्र ही संज्ञाशून्य बना कर अपने वश में कर लिया। अब आफताब का ज़्यादा वक्त और पैसा मुंबई की हवा में उड़ने लगा था।

इश्क और मुश्क कब भला छुपाये छुपे हैं? शीघ्र ही अफरोज़ा को यह सब पता चल गया। वह सीधे आसमान से पथरीली ज़मीन पर गिरी थी। उसने ख़्वाब में भी ऐसा कुछ नहीं सोचा था। वह तो अपनी दुनिया में मगन थे। रुखसाना ने कुछ छुपाने की जरूरत भी नहीं समझी बल्कि उल्टे, उसने यह सुनिश्चित किया कि शीघ्र उनके रिश्ते जग ज़ाहिर हो जाएं। अफरोज़ा ने आफताब को सुखी परिवार और जवान बच्चों का वास्ता दिया। लेकिन इश्क में अंधे आदमी के लिए कुछ भी विचार करना संभव न हुआ।

अफरोज़ा शायद सौत का दुःख भी बर्दाश्त कर लेती लेकिन उसके जीवन में कुठाराघात तब हुआ जब आफताब ने कहा कि वह उसे तलाक देना चाहता है।

अफरोज़ा के पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई। उसे लगा वह कोई सपना देख रही थी, जो आँख खुलते ही टूट गया। यह सपना ही तो था सात वर्ष लंबा सपना। और सपना टूटा था तलाक के हथौड़े की भारी चोट से।

जब कुछ भी कहना सुनना आफताब पर व्यर्थ हुआ तो अफरोज़ा ने लगभग समर्पण करते हुए कहा कि आपको तो चार शादियाँ वाजिब हैं। आप रुखसाना से शादी कर लीजिए। मैं बच्चों के भरोसे रह लूँगी।

लेकिन यह प्रस्ताव रुखसाना को मंजूर न हुआ और जो रुखसाना को मंजूर न था वह प्रेम में अंधे आफताब को भला कैसे मंजूर होता ? स्वाभिमानी अफरोज़ा इससे ज्यादा बात आगे न बढ़ा सकी। जिससे प्रेम ही नहीं उससे संबंध कैसे निभे?

आफताब ने अफरोज़ा को तलाक दे दिया।

तलाक! तलाक ! तलाक ! अफरोज़ा का जीवन शीशे के घर की तरह चकनाचूर हो गया था। अफरोज़ा टूटे काँच के किरचे सम्हालती, बिना हील–हुज्जत किये अपने पिता के घर वापस आ गई थी।

अफरोज़ा को छोड़कर, आफताब अपनी दुनिया में रम गए थे। उधर अफरोज़ा अपनी दुनिया के अँधेरों एवं बेबसी के घने जंगलों में भटकने लगी। वह उससे जितना ही बाहर निकलने की कोशिश करती, उसे लगता वह उतना ही उसमें गुम होती जा रही है। रोशनी का कोई कतरा भी कहीं दिखाई नहीं देता। कोई राह बाहर जाती हुई नहीं दिखती।

अफरोज़ा ने जिस दुनिया को अपना बनाया था, वह उसकी रही नहीं थी। उसकी दुनिया खुशबू की तरह थी, जिसे हवा का एक झोंका उड़ा ले गया था और वह ठगी सी देखती रह गयी थी। वह दुनिया, जिसे उसने अपना माना था, जिसे अपना सर्वस्व बिना किसी प्रतिफल की आशा से सौंप दिया था, वहीं से निकाली जा चुकी थी। अफरोज़ा के बूढ़े पिता उसे पूरी तरह सपोर्ट कर रहे थे। लेकिन जामिया नगर के उस छोटे से घर में अब पहली सी ऊर्जा नहीं रही थी। अफरोज़ा समझती थी कि बूढ़े पिता के कंधे थक चुके हैं। वह खुद भी हाथ पैर मारकर कुछ न कुछ अर्जन करने की कोशिश कर रही थी लेकिन हारे हुए मन से कोई भी काम सफल होता नहीं दिखता।

शादी के बाद रुखसाना मुंबई से दिल्ली आने को राजी नहीं हुई थी। आफताब को शीघ्र ही यह एहसास हो गया था कि रुखसाना ने मुहब्बत का सब्ज़बाग दिखाकर उनकी

जिंदगी की दौलत लूट ली है। लेकिन अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गयी खेत? अब क्या किया जा सकता है? एक बार शादी टूटने के बाद वापसी भी तो संभव नहीं थी।

अफरोज़ा शुरू में आमिर और जोया का हालचाल लेती रहती थी, उन्हीं से बीच–बीच में खबर मिलती कि रुखसाना और आफताब के रिश्ते अच्छे नहीं निभ रहे। आफताब तनाव में रहने लगे थे। कारोबार पर भी इसका असर पड़ने लगा था। यह सब सुनकर कभी–कभी अफरोज़ा का मन आफताब का बचाव करने लगता। वह सोचती सिस्टम ही ऐसा बना है तो कोई भला क्या करे? आदमी का दिल मुहब्बत में बेबस हो जाता है। आदमी को अल्लाह ने बनाया ही ऐसा है। जब कोई औरत अपने हुस्न और जवानी के जाल में आदमी को फांस ले तो आदमी का क्या कुसूर? गलती सुधारने का कोई मौका भी तो नहीं है। क्या पता आफताब को अपनी गलती पर पछतावा होता हो। लेकिन फिर सोचती उसे उसके किस अपराध की सज़ा मिली? उसकी मुहब्बत और समर्पण में क्या कमी रह गयी थी? इन सब सोच की परिणति अफरोज़ा के आंसुओं में होती, जिसका कोई साक्षी नहीं होता। जब रो लेती, दिल को समझा लेती तो मन कुछ हल्का हो जाता।

समय बीतता रहा अफरोज़ा कई जगह छोटी–मोटी नौकरियां करती और छोड़ती रही। ऐसे ही समय में एक दिन उसके हाथ से उसका सबसे मजबूत सहारा छूट गया। अपने पिता के जाने के बाद वह बहुत अकेली हो गई। उसे उम्मीद थी कि उसके अब्बू के इंतकाल के बाद आफताब जरूर आएंगे। लेकिन वे नहीं आए। वफा की उम्मीद का आख़िरी दीया आंधियों की वजह से नहीं तेल की कमी की वजह से बुझ गया था।

अफरोज़ा की बड़ी बहन आतिफा राँची में रहती थी। उसने सोचा कि वहीं कुछ नया काम तलाशा जाए, नई जगह जाने से मन भी बदलेगा। वह कुछ दिनों के लिए राँची चली गई। लेकिन इंसान जैसा सोचता है, वैसा ही होता नहीं है। इसी बीच कोरोना का संकट देश को अपनी चपेट में ले रहा था। हज़ारों लोग असमय ही मौत के गाल में समा रहे थे। रोज़गार का घनघोर संकट उत्पन्न हो गया था। नौकरियाँ छूट रही थीं। लोग घरों में कैद हो गए थे। किसी तरह कोरोना की पहली लहर बीती। अभी लोगों ने राहत की साँस ली ही थी कि दूसरी लहर ने दस्तक दे दी थी। दूसरी लहर अधिक संक्रामक एवं जानलेवा सिद्ध हुई। महामारी की व्यापकता ऐसी थी कि अस्पतालों में बिस्तर नहीं उपलब्ध हो पा रहे थे। मरीजों को ऑक्सिजन नहीं मिल पा रहा था। लोग ऑक्सिजन के बिना छटपटा कर मर जा रहे थे। मरीज के पास जाने से भी बीमारी लग जाने का खतरा था। दवाइयों की भयानक कालाबाज़ारी हो रही थी। इस दूसरी लहर ने आतिफा को अपनी चपेट में ले लिया। किसी तरह उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। अब प्रश्न था कि आतिफा के साथ अस्पताल में कौन रहेगा? आतिफा के पति मज़हर ने घर पर रहकर बेटी का ख्याल रखना चुना और अस्पताल का सारा दारोमदार अफरोज़ा के कंधे पर डाल दिया। अफरोज़ा निर्भीक होकर बहन की तीमारदारी करने लगी। उसने अपनी ज़िम्मेवारी निभाने में कोई कमी नहीं छोड़ी। आतिफा कई दिनों तक अस्पताल में भर्ती रही।

इस बीच आमिर का फोन आया था।

"आपा आप कहाँ हो ? आप आ जाओ। अब्बू को कोरोना हो गया है। वे अस्पताल में भर्ती हैं। उनकी हालत नाजुक है। अब्बू आपको याद कर रहे हैं।

अफरोज़ा बेचैनी के एक अजीब से दौर से गुज़र रही थी। क्या पता आफताब की कोई अंतिम इच्छा हो, जो उसे बताना चाह रहे हों। लेकिन उनकी कोई भी इच्छा से उसे क्या मतलब? वह तो उनकी कोई नहीं। परंतु उन बच्चों की ख़ातिर तो उसे जाना चाहिए। वे पता नहीं किस कठिनाई से दो–चार हो रहे होंगे। करूँ या न करूँ, जाऊँ या न जाऊँ, दुविधा के इस दलदल से वह जितना निकलने की कोशिश करती उतना ही उसमें धँसती जाती।

अफरोज़ा जब इस संबंध में कोई निर्णय नहीं ले पायी तो उसने सोचा कि अपनी बहन आतिफा से बात की जाए। शायद आतिफा सही सलाह दे पाए।

उसने अपनी बहन से कहा कि उसे आफताब दिल्ली बुला रहे हैं।

आफताब !! वह क्यों बुला रहा है? वह कौन है तुम्हारा? उसे क्या लगता है कि वह अभी भी तुम्हारा शौहर है?

"दरअसल आमिर ने फोन किया था। उनकी हालत नाजुक है, बता रहा था"। अफरोज़ा ने स्थिति स्पष्ट की।

जिस आदमी ने तुम्हें तलाक दे दिया। जिसने कभी तुम्हारे दुःख–दर्द की फिक्र नहीं की। जिसने कभी यह नहीं

पूछा कि जी रही हो या मर गयी। ऐसे बेमुरव्वत आदमी से हमदर्दी कैसे हो सकती है?

"आमिर और ज़ोया वहाँ परेशान होंगे" अफरोज़ा ने धीमे से कहा।

एक गैर मर्द के लिए तुम अपनी सगी बहन को इस हाल में छोड़ कर जाना चाहती हो तो बेशक चली जाओ। लेकिन फिर देखना यहाँ का दरवाज़ा तुम्हारे लिए बंद मिलेगा। आतिफा ने एक तरह से अफरोज़ा को धमकाते हुए कहा।

अफरोज़ा का मन खट्टा हो गया। अस्पताल में बहुत खतरा उठाकर उसने बहन की सेवा की थी। उसके शौहर मज़हर भाई तो कभी भूले से भी उधर नहीं गए थे और आज उसकी सगी बहन कैसी बात कर रही है?

क्या रिश्तेदारी ही सब कुछ होती है? क्या इंसानियत कुछ नहीं होती? उसे आमिर और जोया का चेहरा बार–बार याद आने लग। कितने परेशान होंगे दोनों। अफरोज़ा का मन बहुत बेचैन होने लगा था। आमिर और ज़ोया कैसे सब कुछ मैनेज कर रहे होंगे? कहीं उन्हें भी कोरोना का संक्रमण लग गया तो?

अब उसका मन राँची में नहीं लग रहा था। वह बार–बार अपने मन को समझाती कि आफताब भला उनके हैं कौन, उनके लिए क्या परेशान होना? बाजी ठीक ही तो कह रही है। लेकिन दिल के किसी कोने से एक हूक सी उठती और उसके पूरे अस्तित्व को अपने चपेट में ले लेती। अखबार और टीवी के समाचार कोरोना की भयावहता एवं मरने वालों की बड़ी संख्या की खबरों से पटे हुए रहते थे। किसी तरह दो दिन बीते। आतिफा अस्पताल से घर आ गई।

"अब तो आप घर आ गई हैं, मैं कुछ दिनों के लिए दिल्ली जाना चाहती हूँ" अफरोज़ा ने आतिफा से कहा।

"तुम देख रही हो कि अभी भी मेरी हालत कुछ ठीक नहीं, मेरा ऑक्सिजन लेवल कम है। मुझे चलने फिरने में दिक्कत है। ऐसे में तुम गैर आदमी के लिए मुझे छोड़कर दिल्ली जाना चाहती हो।" आतिफा चिढ़ गई थी।

यहाँ तो मज़हर भाईजान हैं न आपकी देखभाल के लिए।"

"और वहाँ रुखसाना नहीं है, तुम्हें छोड़ कर जिससे उसने शादी कर ली थी। मुझे समझ नहीं आता है कि एक गैर मर्द के पास तुम कैसे जा सकती हो। यह गुनाह है.. गुनाह"। आतिफा ने बुरा सा मुँह बनाकर कहा।

अफरोज़ा चुप रही। वह बोल भी क्या सकती थी? उसे समझ नहीं आया कि वो हैरत करे या अफसोस। वह चूंकि आतिफा के यहाँ रह रही है, इसलिए आतिफा उसे लाचार समझकर उसके साथ ऐसा व्यवहार कर रही है। उसे अब खुद ही कोई निर्णय लेना होगा। अफरोज़ा ने सोचा और फिर उसके मन का तूफान शांत हो गया।

अफरोज़ा ने मन कड़ा किया और निर्णय ले लिया। उसने तय कर लिया कि वह दिल्ली जाएगी। उसने इसकी घोषणा अपनी बहन के सामने कर दी।

उसने इंटरनेट से दिल्ली के लिए जहाज का टिकट कराया और एयरपोर्ट के लिए निकल गई।

आतिफा और मज़हर ने उसके घर से निकलते ही भड़ाक से घर का दरवाज़ा उसके मुंह पर बंद कर लिया।

एयरपोर्ट पहुँच कर उसने सोचा कि आमिर को खबर कर दे कि वह दिल्ली आ रही है। वे लोग चिंता न करें।

उसने फोन लगाया।

फोन आमिर ने उठाया।

आमिर चिंता न करो, मैं दिल्ली आ रही है, मैं सब ठीक कर दूँगी।

"अब आने की जरूरत नहीं है आपा, अब्बू नहीं रहे" उधर से आमिर ने बिलखते हुए कहा।

अफरोज़ा धम्म से वहीं बैठ गई। जाने क्या था जो ध्वस्त हो गया हो। जैसे आजतक जिस एक अदृश्य डोर के सहारे ज़िंदगी टिकी थी वह सहारा भी छूट गया था।

उधर एयरपोर्ट पर अनाउन्समेन्ट हो रही थी "दिल्ली जाने वाले यात्री गेट नंबर एक से बोर्डिंग करें"।

अफरोज़ा ने आँखें बंद कर लीं। उसे लगा उसकी फ्लाइट उड़ चुकी है, वह चिड़िया की तरह हवा में उड़कर उसे पकड़ने की कोशिश कर रही है। उसके पंख जहाज से टकराकर टूट रहे हैं, जहाज उसकी पकड़ से दूर होता जा रहा है।

पता : आशीर्वाद, बुद्ध विहार, पो.–अशोक नगर, राँची–834 002

मो. : 8789263238

पाण्डेय जी और उनके जीवन का टर्निंग प्वाइंट

❑ लालित्य ललित

कहते हैं, हर किसी के जीवन में बदलाव आते हैं और यह प्रकृति का स्वभाव भी है, अब देखिए न पिछले कुछ समय से अपने विलायती राम पांडेय ने अपने को बाहर की अलगाव वाली दुनिया से परे कर लिया था। कुछ मित्रों ने समझाया भी, लेकिन कहते हैं न यह स्वभाव अपना अपना है, सो पांडेय जी है, कब बदलेंगे यह कुछ कहा नहीं जा सकता।

वैसे दुनिया में एक पल आता है जब मनुष्य को लगता है कि मतलबी दुनिया में जिसे देखो और जहां देखो वह कुछ अनाप शनाप में लगा हुआ है और भाई साहब यह पांडेय जी जो है वे समझते सब है, शांत रहते हैं और देखते हैं कि सलाह का मुहूर्त कब निकलता है, अपनी सलाह से सामने वाले को चित्त करते हैं और निकल जाते हैं और यह निकलना कोई पतली गली वाला नहीं है, सोचने और समझने की बात है।

पिछले दिनों पांडेय जी किसी आयोजन में परिवार सहित निकले और यह सोच कर निकले कि बहुत दिनों से कोई आउटिंग नहीं हुई थी और यह नितांत पारिवारिक थी, इस लिहाज से किसी आत्मीय मित्र को बताया भी नहीं, लेकिन संपर्क सूत्र के माध्यम से बने रहें। बहरहाल अचानक से पांडेय जी रचनात्मक हुए आइए देखते हैं कि उन्होंने क्या सोचा!

गहरी सांस लीजिए

अपने भीतर लगातार गहरी सांस लीजिए और भीतर की विषैली हवा बाहर छोड़ते रहिए उससे क्या होगा आपके भीतर लगातार यह प्रक्रिया करने से ऊर्जा का आगमन होता रहेगा बिलकुल भी यह अभ्यास किसी भी कारण से रुकना नहीं चाहिए इसको अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लेना चाहिए उसके ऐसा करने से दिल और दिमाग समन्वय रूप में काम करेंगे एक दूसरे पर बिलकुल भी हावी नहीं होने लगातार और हमेशा यह अभ्यास जारी रखें यह प्रक्रिया सुबह शाम की सैर के साथ जीवन के हर मोड़ पर जारी रहनी चाहिए और हमेशा यह सोच कर आगे बढ़ते रहिए कि यह आपका पहला चरण है देखिएगा यह सांस वाला फॉर्मूला आपके जीवन को आपकी जीवन शैली को एकदम बदल देगा हरि ऊँ।

कहते हैं कि सुबह पार्क में सैर करना जहां स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य कदम है वहीं यह मार्ग स्थापित करता है कि जीवन के बदलाव कितने अहम हैं और कितने जरूरी हैं।

इसलिए रामप्यारी ने भी कहा कि क्या पांडेय जी! आजकल अपनी मित्र मंडली में नज़र नहीं आते? क्या बात हुई!

अब पांडेय जी समझे नहीं कि रामप्यारी ने वैसे ही गोला दागा है या फिरकी लेने के लिए बात का बतंगड़ बनाने की कोशिश की है, लेकिन मामला ऐसा वैसा बिलकुल नहीं था, सो पांडेय जी बाल बाल अव्यावहारिक चिंतन से बच गए थे।

कहानी किसी भी मनुष्य की होती है ऐसी कि परिवार में कालू पीलू होते हैं, उनकी पढ़ाई लिखाई में जुटे और वे कुछ बन जाएँ तो मां बाप उनकी एल्बम निहारें और समय होने पर वीडियो कॉल पर आ जाएं, बस। इसके अलावा बच्चों के मन से मां बाप को कोई अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए, तभी बाकी की ज़िंदगी खुशहाल रहेगी, अन्यथा नहीं।

पांडेय जी ने कहा भइया पहली बात मेरे हाथ में कोई अलादीन का जिन्न नहीं है, मेरी कोशिश रहती है कि समस्या का हल होना ही चाहिए और उसके लिए हमें गलत दिशा में नहीं जाना। कुछ लोग समझ लेते हैं कि कहीं पहुंचने के लिए जीवन में शॉर्ट कट का तरीका अपना लिया जाएं पर होता क्या है कि वही शॉर्ट कट रास्ता आपकी समस्याओं का प्रवेश द्वार बन जाता है, जहां तक कोशिश हो, ऐसी कोताही से बचने का प्रयास किया जाएं।

क्या समझें! समझा करो भाई, यह कोई हंसी मज़ाक नहीं, गंभीर चिंतन की बड़ी दयनीय अवस्था है।

अगर दुनिया के मतलबी, स्वार्थी लोग एक साथ मिल जाएं तो क्या होगा! सोचिए कुछ खास नहीं होंगा, पर स्वार्थ कुलांचे भरता हुआ रणवे पर आएगा, जाएगा और एक हसरत भरी जिज्ञासा छोड़ जाएगा, बात को समझिए, क्या समझें!

आज तो कमाल यह हुआ कि पांडेय जी को किसी ने कहा भाई साहब आपसे मिलने का बड़ा मन था, पर क्या करें! किराया इतना ज़्यादा है तो दिल्ली आने का मन नहीं कर रहा, पहले तो यह बता दीजिए वे कौन से कारण हैं! जो आप सबकी गाथा लिए बैठते हो और कोशिश करते हो कि कैसे भी हो इस समस्या का समाधान निकाला जाएं।

पांडेय जी ने कहा भइया पहली बात मेरे हाथ में कोई अलादीन का जिन्न नहीं है, मेरी कोशिश रहती है कि समस्या का हल होना ही चाहिए और उसके लिए हमें गलत दिशा में नहीं जाना। कुछ लोग समझ लेते हैं कि कहीं पहुंचने के लिए जीवन में शॉर्ट कट का तरीका अपना लिया जाए पर होता क्या है कि वही शॉर्ट कट रास्ता आपकी समस्याओं का प्रवेश द्वार बन जाता है, जहां तक कोशिश हो, ऐसी कोताही से बचने का प्रयास किया जाए।

सामने वाले चिंग पोकली अंकल सुन रहे थे कि आज पांडेय जी को क्या हुआ है जो प्रवचन देने की मुद्रा में हैं। हुआ यूं कि असंतुष्ट कुमार ने पिछले दिनों बताया था कि उन्हें नौकरी करते हुए तीस साल से ऊपर हो गए और महकमा उनकी तरक्की नहीं कर रहा।

पांडेय जी ने कहा कि साहब लोगों से बना कर रहिए, कुछ न कुछ असर ज़रूर होगा, पर अपने असंतुष्ट कुमार ठहरे गुस्से वाले वाचाल पुरुष। जब आता है तो न आव देखते और न ताव। फट पड़ते है, ऐसे में आप ही बताइए अगला कौन करेगा तरक्की!

पांडेय जी आजकल ऐसे किस्सों से अपने को अलग किए बैठे हैं, इसका अर्थ यह बिल्कुल मत लगा लीजिएगा कि उन्होंने अपने को समाज से काट लिया है, बल्कि चुपचाप यह देखने में लगे है कि किस का और कितना पतन अभी बाकी है, कुछ इतना गिर चुके है कि कैसे भी उन्हें उठा लो, उठ का नहीं देंगे।अजब हाल है और अजब बाशिंदे हैं ये अलहदा प्रवृत्ति वाले।

अंतर्मन ने कहा जाने दीजिए, पांडेय जी और कितना बिलबिलाएंगे आप! जिन्होंने नहीं सुधरना, वे किसी भी हालत में नहीं सुधरेंगे, आप कितना ही दम लगा लीजिए, आई बात समझ में। उधर रामप्यारी लगातार फोन की घंटी बजाए हुए थीं, हार कर पांडेय जी ने उठा लिया। कहने लगीं चीकू की ट्यूशन के पैसे पे टी एम कर दो, पांडेय जी ने कहा हुकुम की तालीम हो, बस भुगतान हुआ और उधर रामप्यारी ने अपना फोन स्विच आफ किया।अलग मामला है। जिनकी शादी हो गई, वह दुःखी और जिसकी किसी कारण नहीं हुई वह मजनूँ बना हुआ गली गली घूम रहा है, कौन किस को समझाएं और किस का कहना माने!

आज पानी खूब बरसा। ऊपर वाले की मर्ज़ी पर है जब इच्छा होगी, तब बरसेगा, नहीं तो आग उगलता है मौसम। किसी का कोई ज़ोर नहीं।

अब जिसको जो समझना हो, समझें!

पांडेय जी बड़बड़ाते रहे। यह दुनिया भाई अजीब है कोई काम करते करते पागल हो जाता है तो कोई किसी के प्रेम में पगला जाता है। पता नहीं हिंदुस्तान का क्या होगा!

उधर अपने पांडेय जी को पार्क में दस बीस लोग नमस्कार नहीं कर लेते तब तक पांडेय जी कहते रहते हैं क्या अजब तमाशा है लोगों में, कोई किसी से वास्ता नहीं रखता। अरे भैया, सुख दुःख में तो मदद करनी चाहिए, एक दूसरे की। पर नहीं, सब लालची एक जगह, एक महल्ले में जमा हो गए।

उधर बैंक के इंट्रेस्ट रेट का पतन बहुत तेज़ी से होता दिख रहा है, उसको गिरते देख लगता नहीं कि कभी ब्याज दर उठेंगी भी!

क्या करोगे! बड़बड़ाते हुए पांडेय जी ने देविका गजोधर को याद किया और कुछ देर चारपाई पर ठंडी हवाओं के बीच सोने का प्रयास करने लगे। वैसे नींद नहीं भी आती, पर यहां ज़िक्र देविका का था तो ज़ाहिर है नींद नहीं तो हल्के फुल्के लटके तो आने ही थे।

सामने पार्क है और मौसम बेहाल, यही कारण है कि साहनी साहब आज छुट्टी कर गए, पांडेय जी ने चमनलाल जी को कहा देखा ऐसे नहीं चलेगा, इन पर जुर्माना लगना चाहिए, चमन लाल मुस्करा दिए, मानो उनकी भी मौन सहमति किसी सहयोगी दल की हो कि बाहर से समर्थन जारी रहेगा।

तभी रामप्यारी ने पुकारा सुनो जी, क्या सो गए!

उठिए चाय और नमकीन ला रही हूं, कुछ बात करनी है। पांडे जी सोचने लगे ऐसी क्या बात है!

और मिजाज़ भी जरा प्यार भरा है, आख़िर माजरा क्या है!

ऐसी स्थिति तो तब होती है जब कोई शॉपिंग का बिल भुगतान के लिए परोसा जाता है। कुछ भी हो, पांडेय जी नहीं डरेंगे।

उन्होंने मन बना लिया कि चाहे कुछ हो जाए, वे बॉर्डर पर टिकने वाले वे सिपाही हैं जो हर विपरीत स्थिति का मुकाबला करेंगे।

रामप्यारी ने कहा चाय और पकौड़े सर्व करते हुए, सुनिए न आपके भतीजे की शादी है और उसके लिए कुछ ड्रेस लेनी है, माजरा समझ गए पांडेय। मरते क्या न करते, हामी भर दी, रामप्यारी खुशी में इतराती हुई चली गई।

उधर मौसम से बेहाल पांडेय जी बिजली विभाग में धंसे हुए हैं और फोन पर फोन लगातार आ रहे है कि बिजली नहीं आ रही देविका गजोधर के इलाके में, बस फिर क्या था पांडेय जी ने राम किशन पुनिया के इलाके की बत्ती काट कर देविका के घर को जग मग कर दिया और देविका का एसी भी चलने लगा,उसने पांडेय जी को कहा मौसम भी है पकौड़े भी हैं तो क्या सोचना!

पांडेय जी ने शाम का प्रोग्राम बना दिया और रामप्यारी के लिए कोई उपयुक्त सा बहाना अपने शब्द कोश में तलाशने लगे। गजब की लीला है और अजब व्यवहार है प्रेम लीलाओं का। जहां आदमी किसी भी उम्र में हो फिसल जाता है,अब वह गैंदा मल कलसी हो, चुप्पी प्रसाद भट्ट हो।

बहरहाल जीवन के रंग बहुतेरे हैं जिसको जो भी व्यक्ति जितना जल्दी हो समझ लें।

सामने पार्क है और मौसम बेहाल, यही कारण है कि साहनी साहब आज छुट्टी कर गए, पांडेय जी ने चमनलाल जी को कहा देखा ऐसे नहीं चलेगा, इन पर जुर्माना लगना चाहिए, चमन लाल मुस्करा दिए, मानो उनकी भी मौन सहमति किसी सहयोगी दल की हो कि बाहर से समर्थन जारी रहेगा।

उधर चीकू का ड्रामा चालू है कि स्कूल जाना है लेकिन अपनी शर्तों पर, उधर पांडेय जी ने भी अल्टी मेटम दे दिया है कि वे भी देखते हैं कि ये ड्रामा कब तक चलेगा!

मामला विकट है, इस उम्र के बच्चे मां बाप की कहां सुनते हैं! वे सुनते हैं ट्रैवल ब्लॉगर की और नेट फ्लिक्स पर बेहूदा सी क्लास के अभिनेताओं की संवाद डिलीवरी को जिससे भाषा का पतन और गिरावट, वही उनके व्यवहार में भी नज़र आती है। क्या होगा इस पीढ़ी का जिससे पीड़ित हैं आज के पेरेंट्स!

अंतर्मन ने कहा पांडेय जी ज़्यादा मत सोचा करो,कुछ बातों को ऊपर वाले पर छोड़ देना चाहिए, बाकी जो किस्मत में होगा, वह तो मिलेगा ही। हरि ऊँ।

पता : बी, 3/43, शकुंतला भवन, पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063

मो. : 9873525397

मंजुला श्रीवास्तव की कविताएँ

मंजुला श्रीवास्तव

(1)

कुछ अश्रु बन तुहिन कणों में मिल जाएँगे
कुछ मुस्कान बने पँखुड़ियों में घुल जाएँगे
शेष व्यथा जो संग चिता के, श्मशानों तक हो आएँगे

सड़कों से पूछो तो जानो, पाँव मेरे उनसे कितने परिचित हैं
फूटे छाले जो तेरी छाती पर अब भी धब्बों के निशां बाकी हैं
कोई रंग नहीं ऐसा, जो संग चिता के श्मशानों तक जाएँगे

इक समय हुआ करता था, मरने में. फक्र हुआ करता था
ये भी क्या समय हुआ है, जी कर भी मरना
भाता है
जो समय था अपना बीत गया, ये भी बीतेंगे हँसते श्मशानों में

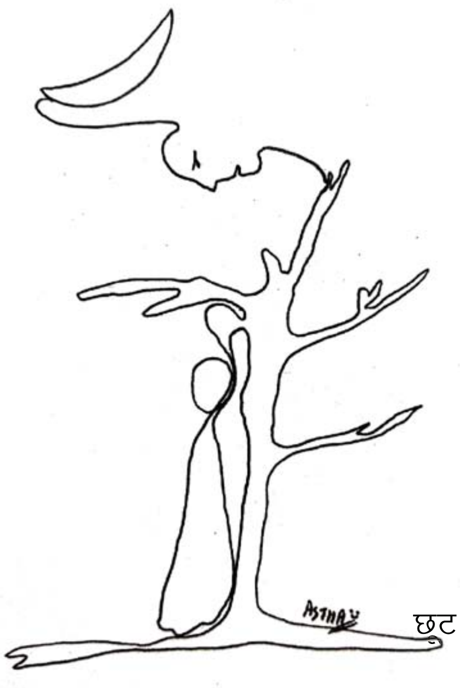

कुछ जुगनू बन चमकेंगे, कुछ बन के पतंगा जल जाएँगे
कुछ भटकेंगे अँधियारे में, कुछ रोएँगे अपने सूनेपन में
कुछ नेह चिता के संग, श्मशानों तक यूँ ही जाएँगे।

सम्मानों की कोई बात करे क्या अपमानित सम्मान मिले हैं सबको
चोटिल मन की चोट को ये मन, मन ही मन में जाने हैं
टूटा रहे कुछ सन्नाटों में, कुछ श्मशानों में टूटेंगे

कुछ काँटे यूँ ही उग आते हैं जब रिश्तों के मनके बिखरते हैं
छूट गए जो राहों में ज़ख्मी मोड़ों पर, वो अक्सर नींदों की हँसी उड़ाते हैं
उनमें से कुछ सपने, संग चिता के श्मशानों तक जाएँगे

(2)

यूँ ही चल पड़े थे सफर में हम तो तनहा ही
पता ही नहीं था कि मिलेंगे आप सलीके से

श्वांस थमने तक ज़रूरी है दुनिया में दुनिया की
राख होने तक कफ़न पर लिखेंगे नाम सलीके से

कैसे कह दूँ कि इस सुख़न के काबिल हूँ मैं
जब कि शर्त है ये कि पीएंगे जाम सलीके से

रुका ही कब कोई बयार रस्ते में तसल्ली से
खोजती हैं निगाहें फिर भी अपने राम सलीके से

हुआ इम्तहान इस कदर, गुज़रे जिस राह से
अब आदत को है आदत का रखेंगे मान सलीके से।

मिल गया ये कारवां मुझको आज महफिल में
न जाने कहाँ किससे कब छूटेंगे हाथ सलीके से।।

(3)

जब–जब मैंने चाँद निहारा अक्स ही अपना धुँधला पाया
इस धुँधली दुनिया के साधक अब तक कुछ भी समझ न पाया

हाथ तुम्हारे जो भी आया रेखाओं में घिसते देखा
इस फ़ानी सागर को मैंने लहरों संग मचलते पाया

रात सुहानी चाहे जितनी चाँदनी वापस जादे देखा
तब उषा ने दस्तक देकर भाल दिवा के तिलक लगाया

इस काया को धुलते मलते पल–पल मैंने घटते देखा
मन के गागर के मोती को तट पर मैंने चुनते पाया

चाहे जितनी ज़िल्द हो मोटी पन्ना–पन्ना फटते देखा
पर पन्ने पर लिखी इबारत सदियों–सदियों पलते पाया।

जब–जब नैन हमारे बंद हुए तो अर्चन वंदन तेरा ही पाया
प्रार्थना मेरे मौन घनेरे श्वासों को तब मूक ही पाया।

◆

पता : 2/5, गुरु गोविन्द सिंह,
इन्द्रप्रस्थ वि.वि., विश्वास नगर, एक्सटेंसन,
शाहदरा, दिल्ली–110032
मो. : 9891968929

स्नेहमधुर की कविताएँ

स्नेह मधुर

ताला चाभी

हर ताले की होती है
एक चाभी
हर चाभी का होता है
कोई न कोई ताला
चाभी खो जाए तो
बस, लटका रह जाता है
ताला।

ताला
तो चाभी
चाभी तो
ताला।

ताला हो चाहे कितना भी
भारी भरकम
मोंछदार रुआब वाला
या फिर चिकना चुपड़ा
नन्हा सा
मुट्ठी में छिप जाने वाला
बिन चाभी सब सून
या तो लटके रहो मायूस से
या फिर
किटकिटाते रहो
बिना दांत वाले मसूढ़े की तरह
किस काम के?
न हो सकते हो बंद
और न ही
सकते हो खुल।

और चाभी
बेचारी
किस्मत की ताली
पर है बेबस
रह जाती है छटपटा कर
ताला ही तो है
उसका श्रृंगार
बिन प्रीतम सब सून।

क्यों नहीं होते चाभियों के पैर पंख
और तालों के लंबे हाथ
ताकि ढूंढ लं अपने जोड़े को
और हो जाए सुखद मिलन।

एक ताले की एक चाभी
दो तीन भी हों तो क्या है
जिस दिन दरवाज़े की कुंडी पर
लटकेगा ताला
तो समझो दोनों को होना है दूर
कितनी देर की विदाई
कुछ पता नहीं
तो क्या ?

क्या जब ताले नहीं लटके होते
कुंडियों पर
क्या उनकी चाभियां होती हैं
हरदम उनके पास
चाभियां
पहुंच जाती हैं गुच्छों में
जहां पर और भी चाभियां
करती होंगी विलाप।

आख़िर कितने दिन की ज़िंदगी है

और कितने दिन का विलाप
चाभियां
हमेशा रहती हैं जवान
और ताले होते रहते हैं बुड्ढे
जब ताला खुलने बंद होने में
करता है आनाकानी
या आलस्य
आ जाता है उसका अंतिम दिन।
फेंक दिया जाता है ताले और चाभी को
अलग अलग।

कैसी है दोनों की नियति!

कुछ ही ताले होते हैं
जिनको अक्सर मिलता रहता है
अपनी चाभी का साथ
कुछ तालों के पास
पड़ी होती हैं दूसरी चाभियां
और मुंह बिसराती रहती हैं
तालों को
और बिना हाथ पैर के ताले
बस ललचाते रह जाते हैं
इन चाभियों को देख देख कर।

ताले चाभी जैसी ही है ज़िंदगी
मिलना कम
बिछड़ना ज्यादा है।।

नज़रिया

मैं
किसी का नहीं।

क्या मुझे
किसी का
होना चाहिए?

कितनों का?

किसी एक का
दो का
कई का?

आप किसके हैं
यह किसी को पता नहीं
क्योंकि
यह भी एक कला है।

हों आप सभी के
लेकिन दिखें
किसी एक के साथ तो
दूसरा भांप भी न सके कि
आप किसी और के भी हैं
उसके अलावा।

आप कह सकते हैं कि
जो सबका होता है
वह किसी एक का
हो ही नहीं सकता
जो किसी एक का हो नहीं सकता
वह सबका कैसे होगा?

क्या सबका होना
या किसी एक का ही
क्या मुझे पहले अपने बारे में
सोचना चाहिए?

अपना सोचो तो
अपने से जुड़े लोगों के बारे में भी
क्या वे भी मुझ जैसा ही सोचते हैं
मेरी तरह ही खुद को
बदलते रहते हैं?

मैं चाहता हूं
दुनिया बदले
तो क्या बदल सकता हूं?

लोग कहते हैं

दुनिया मत बदलो
क्यों न बदलूं
दुनिया बदलने की फ़िक्र करने की
क्या ज़रूरत तुम्हें
जब तुम बदलोगे
तो यही दुनिया
तुम्हें
बदली नज़र आयेगी
चश्मा बदलने से
दुनिया नहीं बदलती
लेकिन नज़रिया ज़रूर बदल जाता है।।

निशाना

हम चाहते हैं
क्या?

ये भी
वो भी
शायद वो सब भी।

सीधा बोलो
यह नहीं
या वह नहीं।

यह क्यों नहीं?
वह क्यों नहीं
आख़िर इसको क्यों
आख़िर इसी को क्यों
यही?
हां
वह क्यों नहीं
यही
बस यही।

पक्का?
कैसे पाओगे
पा लूंगा
कैसे?

बस पा लूंगा
कैसे भाई?

जब चाह लिया है
तो रास्ता भी ढूंढ लूंगा
पक्का?
कोई भ्रम?
नहीं।

नहीं पा सके तो
पा लूंगा
असंभव नहीं है?

असंभव कुछ नहीं है
मेरे लिए तो
बिलकुल भी नहीं।

आसान है क्या?
बहुत ही आसान।

इतना आसान कैसे?
जब चाह लिया
तो उसी पल से सबकुछ
आसान सा हो गया है
कठिन तब तक था
जब तक
नहीं साधा था
निशाना।।

◆

पता : 11/7, डाली बाग, तिलक मार्ग, लखनऊ– 226001
मो. : 9415216045

लालित्य ललित

❑ सूर्य कांत शर्मा

बहुत पुरानी कहावत है की 18 मांसपेशियां! चाहिए मुस्कुराने को और 42 मांसपेशियां! चाहिए मुंह बिसूरने या क्रोधित भाव का दर्शाने को? परंतु यहां एक और भाव है या भंगिमा कहें तो अधिक उपयुक्त होगा व्यंग्य सटीक, पैना, औचित्यपूर्ण, सुसभ्यता से परिपूर्ण व्यंग्य–मुस्कुराने से भी कम एक स्मित हास की रेखा जो व्यक्तित्व को मणिकांचन आभामंडल से आच्छादित कर दे, वही तो है व्यंग्य! कितनी सुंदर और मनोहारी है, इस व्यंग्य की छटा परंतु यह स्वस्थ और गुदगुदाने वाली विधा अब कम ही देखने में आती है। अब उसका स्थान स्टैंडिंग कॉमेडी या कॉमेडी लेने के प्रयास में है,पंजाबी की कहावत है कि पराया गहना पाया/पहना और अपना रूप गंवाया! अस्तु व्यंग्य एक सशक्त परंतु बेताल सा चुनौतीपूर्ण कार्य है। अगले ही वर्ष हम व्यंग्य पुरोधा स्वर्गीय श्रीलाल शुक्ल का जन्मशती वर्ष भी मनाने जा रहे हैं।

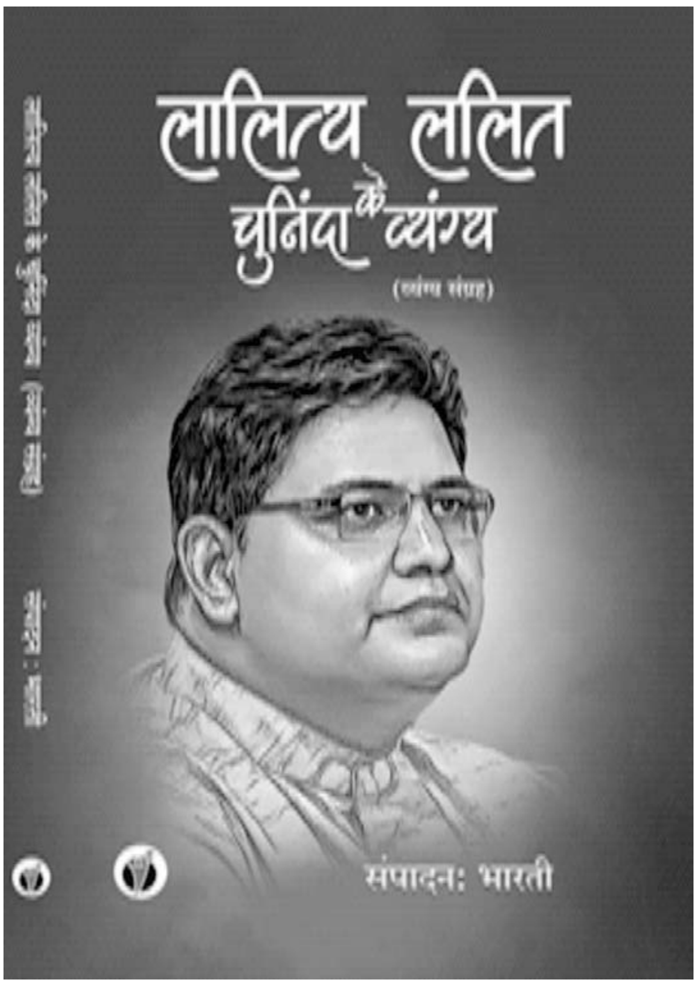

पाठक सोच रहे होंगे कि आख़िर बात क्या है ? तो जब बात सीधे–सीधे कुछ इस प्रकार है कि अब व्यंग्य लिखने वाले और प्रकाशित व्यंग्य संग्रह की संख्या भी सीमित होती जा रही है। कारण है कि हमारे जन मानस में विसंगतियों को देखकर उनकी आलोचना समालोचना करने वाले और उसे सहन करने वाले दोनों ही कम होते जा रहे हैं। ऐसे में कुछेक नाम ही व्यंग्य साहित्य आकाश में चमक रहे हैं। उन्हीं में से एक नाम है युवा सोच रखने वाले लालित्य ललित जी का?! जिनका एक संचयित और संपादित व्यंग्य संग्रह अब इस समीक्षित पुस्तक के रूप में सामने है।

कुल 17 चुनिंदा व्यंग्य का गुलदस्ता, एक युवा शोधार्थी भारती द्वारा संचयित करके पाठकों के सामने प्रस्तुत किया गया है। युवा शोधार्थी भारती ने व्यंग्य संग्रह में अपनी संपादन क्षमता के साथ–साथ यह भी संदेश देने की कोशिश की है कि लालित्य ललित भविष्य की व्यंग्य पौध को भी सहेज और संवार रहे हैं। बहुधा देखा गया है कि प्रतिष्ठित व्यंग्यकार अपने सृजन किन्हीं युवा हाथों में कम ही सौंपते देखे गए हैं।

बहुधा पाठक और विशेष रूप से किशोर और युवा यह प्रश्न पूछते हैं कि व्यंग्य क्या है, और अच्छा व्यंग्य कैसे लिखा जाता है? साधारण शब्दों में व्यंग्य तभी उपजता है जब प्रतीकों और विंबों द्वारा किसी घटना व्यक्ति या विसंगति पर एक विशिष्ट शैली में शाब्दिक प्रहार किया जाता है। व्यंग्य में हास्य नहीं पीड़ा का भी समावेश बेहद ज़रूरी है, बेहतरीन से बेहतरीन व्यंग्य में विसंगतियों का चित्रण इस प्रकार किया जाए कि पाठक का बोध जागृत हो अर्थात उसमें जानने की ललक पैदा हो कि क्या लिखा जा रहा है? क्यों लिखा जा रहा है? एक मूल तथ्य या सिद्धांत यह भी है व्यंग्य कि सदैव ही प्रत्यक्ष यानी अमिधा में न होकर परोक्ष यानी व्यंजना के रूप में ही होता है।

पाठकों को यह बताना भी नितांत आवश्यक है कि विसंगतियों को उभारने की व्यंग्य की यह धारा लब्ध प्रतिष्ठित व्यंग्य विभूतियों यथा शरद जोशी, हरिशंकर परसाई, श्रीलाल शुक्ल, नरेंद्र कोहली और रविंद्र नाथ त्यागी, की रचनाओं में स्पष्ट रूप से पढ़ी और समझी जा सकती है। इसी की कुछ छोटी सी बानगी इस समीक्षित पुस्तक में संचयित व्यंग्यों में पढ़ी और महसूस की जा सकती है।

पाठकों को यह बताना भी नितांत आवश्यक है कि विसंगतियों को उभारने की व्यंग्य की यह धारा लब्ध प्रतिष्ठित व्यंग्य विभूतियों यथा शरद जोशी, हरिशंकर परसाई, श्रीलाल शुक्ल, नरेंद्र कोहली और रविंद्र नाथ त्यागी, की रचनाओं में स्पष्ट रूप से पढ़ी और समझी जा सकती है। इसी की कुछ छोटी सी बानगी इस समीक्षित पुस्तक में संचयित व्यंग्यों में पढ़ी और महसूस की जा सकती है। वर्तमान में तेज़ी से बदलती परिस्थितियों में विसंगतियों को औचित्य पूर्ण और जनरंजन की दृष्टि से देखकर उसे बोधगम्य भाषा में पाठकों तक पहुंचाना भी एक चुनौती है। व्यंग्य संग्रह के लेखक लालित्य ललित अब ऐसे व्यंग्यकार के रूप में उभरे हैं जो समाज को देखने के लिए दूरबीन और खुर्दबीन यानी माइक्रोस्कोप की उभय दृष्टि को लेकर के विसंगतियों, विद्रूपताओं, शोषण को देखता पड़ताल करता और फिर एक नए अंदाज़ में अपने व्यंग्य से पाठकों में गुदगुदाहट, सुगबुगाहट, बेचैनी और पीड़ा को संप्रेषित करने में अब अनुभवी हो चुका है।

सत्रह के सत्रह व्यंग्य जनोन्मुखी–सरोकार परक समीकरण को प्रस्तुत करते से प्रतीत होते हैं, कुछेक के नाम उदाहरण के तौर पर लिए जा सकते हैं यथा 'पांडेय जी की हरिद्वार यात्रा', 'पांडेय जी नवरात्रे और सामाजिक टंटे', 'पांडेय जी फितूर और आदर्शवाद का झंडा', 'पांडेय जी पुस्तक मेला और उसकी दीवानगी', 'पांडेय जी सम्मान मंडी में'। पूरे व्यंग्य संग्रह में कथ्य, शिल्प, भाषा और कहन में नवीनता को देखा जा सकता है।

व्यंग्य विधा में शाब्दिक प्रहार और वह भी व्यंजना में किरदारों यानी पात्रों विशेष और उनकी निरंतरता स्वतंत्रता भी बनी रहनी चाहिए ताकि पाठक उस से भावनात्मक जुड़ाव भी महसूस कर सकें तभी तो दृश्य श्रव्य की संगमित अनुभूति सृजित होकर व्यंग्य के जादू के प्रभाव को पाठकों के समक्ष प्रदर्शित कर सके।ललित लालित्य के गढ़े गए कुछ पात्र यथा पांडेय जी, लपकू राम, अंतर्मन कुमार, टिप्सी मुटरेजा, हवलदार देविका गजोधर, राधे लाल शर्मा इत्यादि, लेखक की रचनाओं में इस कदर नैसर्गिक भाव से रचित हो गए हैं कि शाब्दिक प्रहार आभासी ना होकर वास्तविकता के संसार में दखल देता नज़र आता है।

इस व्यंग्य संग्रह में एक और खासियत या अलग बात नज़र आई। व्यंग्य में स्थान स्थान पर कविताओं का समावेश है, जिससे व्यंग्य की बोधगम्यता सरल हो जाती है और आज के पाठक जो व्यंजना को समझने में समय लेते हैं या फिर अमिधा से आगे बढ़ना नहीं चाहते या जानते हैं उन्हें इन लघु और आशु कविताओं से काफी मदद मिल सकती है।

कभी किसी गिलहरी से कुछ सीखो गिलहरी कभी भी

बिजली के तार पर भरतनाट्यम कर लेती है ऐसे ही आम आदमी भी कहीं भी कुछ भी करने में समर्थ है इसलिए कहीं से कुछ ज्ञान भी मिल सकता है।

पांडे जी और दुनियावी झोल जो पुलिस थाने में हिंदी पखवाड़ा मनाने को केंद्र में रखकर लिखा गया है उसी में यह कविता पाठक को हिंदी भाषा और हिंदी पखवाड़े के मध्य का मर्म समझने में कितनी सक्षम है इस बानगी से आप देख सकते हैं राम राम जी शब्द प्रतिध्वनित होगा यही आत्मीयता होती है शब्दों के सरोकारों की बहते हुए जल की किसी नदी के जल के स्पंदन को महसूस करो कितना दूर से वह आपको सुनाई देगा यही आत्मीयता है सरोकार की।

जीवन की विसंगतियों पर व्यंग लिखा जाता है। यह हम सभी जानते पढ़ते सुनते समझते हैं पर इसी व्यंग्य संग्रह में पांडेय जी और रोज़मर्रा की ज़िंदगी के टोटके में कुछ गुदगुदाहट सी, कुछ तंज सा महसूस होता है। उदाहरण के तौर पर–समय का मान सम्मान अवश्य करना चाहिए। जो नहीं करता वह हमेशा घाटे में रहता है और इसी को कविता में भी बताया गया है बेहद सार्थक और सहज अंदाज में।

सत्रह के सत्रह व्यंग्य जनोन्मुखी–सरोकार परक समीकरण को प्रस्तुत करते से प्रतीत होते हैं, कुछेक के नाम उदाहरण के तौर पर लिए जा सकते हैं यथा 'पांडेय जी की हरिद्वार यात्रा', 'पांडेय जी नवरात्रे और सामाजिक टंटे', 'पांडेय जी फितूर और आदर्शवाद का झंडा', 'पांडेय जी पुस्तक मेला और उसकी दीवानगी', 'पांडेय जी सम्मान मंडी में'। पूरे व्यंग्य संग्रह में कथ्य, शिल्प, भाषा और कहन में नवीनता को देखा जा सकता है।

समय का क्या है वह पहलवान है बाहुबलियों से भी अधिक और पैसे वालों से ज्यादा उसकी तूती बोलती है कब कहां और किसकी बोलत बंद कर दें सांस रोक दे और जड़ से चुप करवा दें।

महंगाई पर तंज करते हुए बड़े ही रोचक अंदाज़ में यह कथन पाठकों को निश्चित रूप से पसन्द आएगा यथा गैस का सिलेंडर कभी महंगा होता है कभी आलू का भाव किचन से गायब। अब तो लगता है कि वैश्विक युद्ध खाने–पीने की वस्तुओं को लेकर ही लड़ा जाएगा। आज का मानव मोबाइल टेलीविजन से अलग नहीं रह सकता है इसी व्यंग्य में इस पर भी पाठक को आइना दिखाया गया है।

यह समीक्षा अधूरी रहेगी अगर इसमें चौदहवें नंबर का व्यंग्य–'पांडेय जी सम्मान मंडी में' का जिक्र ना हो। आज के सोशल मीडिया में एक बाढ़ सी आ गई है।जो कभी मंच संचालन तत्पश्चात पोस्टर बनना, सम्मान बेचना, खरीदने वालों का जमावड़ा, बड़े–बड़े होटलों में सम्मान आयोजन और फिर आत्म मुग्ध प्रबुद्ध गण का आलाप प्रलाप और सम्मान ना मिलने का विलाप!? इसी को पैने और सशक्त परंतु रोचकता के पुट के साथ एक कविता के रूप में बयां किया गया है।

आत्म मुग्ध लोगों का पता मुझे पता है आत्म मुग्ध लोगों के रहने का पता वे चाहते हैं कि उनके जीते जी उन्हें देश का बड़ा सम्मान मिल जाए किसी मोहल्ले का प्रवेश द्वार संकेत सूचक पट्टी उनके बारे में दर्शाती हुई नज़र आए।

व्यंग्य संग्रह में इक्का दुक्का प्रूफ रीडिंग की कमी है पर यह मनोरंजन और व्यंग्य के रस भाव के आड़े नहीं आती है।

कुल मिलाकर एक शानदार और जानदार व्यंग्य संग्रह जो आपको पढ़ने और गुनने के आनंद के साथ साथ आपको गुदगुदाने और वर्तमान समाज की यथा स्थिति से दो चार यानी सजीव साक्षात्कार कराने में पूर्णतया सक्षम है, अतः खरीद कर पढ़ने और बतियाने में बढ़िया व्यंग्य संग्रह है। ◆

पुस्तक : लालित्य ललित के चुनिन्दा व्यंग्य

पृष्ठ सं. : 112

मूल्य : 119 रु.

संपादन : भारती

प्रथम संस्करण : मार्च, 2024

प्रकाशक : स्वतन्त्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

पता : फ्लैट बी–1, मानसरोवर अपार्टमेंट, प्लॉट नंबर तीन, सेक्टर पांच, द्वारका, नई दिल्ली–110075

मो. : 7982620596

अंतस को झखझोरती कहानियाँ

❑ रोचिका अरूण शर्मा

आज लिख रही हूँ एक ऐसे कहानी संग्रह पर जिसकी कहानियाँ पढ़ते–पढ़ते मन में उठे भावों की श्रृंखलाएं शुरू होती हैं तो खत्म ही नहीं होती हैं लेकिन फिर कभी लहरों सी हिलोरें ले कर पुनः मन में तूफान उठा देती हैं। जोधपुर निवासी वरिष्ठ कथाकार आदरणीय हरिदास व्यास जिन्हें अन्य कई महत्वपूर्ण सम्मानों के साथ–साथ राजस्थान साहित्य अकादमी का "रांगेय राघव कथा सम्मान–2018 में प्राप्त हो चुका है। आप की कहानियाँ आकाशवाणी जोधपुर पर प्रसारित होती रहती हैं, उन्हें मैंने सुना एवं कोरोना काल में लाइव के माध्यम से आपकी कहानियों से रूबरू भी हुई। हर कहानी में कुछ न कुछ विशेष, और अत्यंत ही मार्मिक है। नई, प्रवाहमयी कहानियाँ और इन कहानियों का संकलन "कहानी है कि खत्म नहीं होती" पढ़ कर अपने विचार इस संग्रह पर रखने के लिए बाध्य हूँ। यह संकलन राजस्थान साहित्य अकादमी के आर्थिक सहयोग द्वारा प्रकाशित हुआ है।

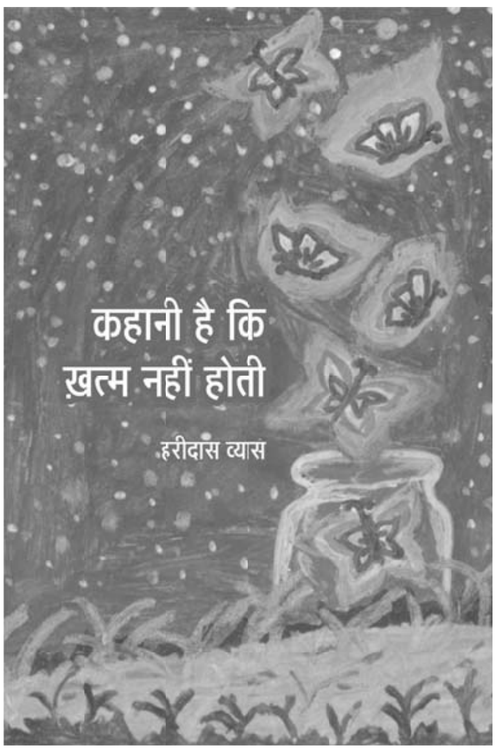

अपने आस–पास के माहौल से कुछ घटनाएँ जो कि देखने–सुनने में सामान्य ही लगें शायद। लेकिन लेखक ने शब्दों में पिरोकर उन घटनाओं को मानो किसी 'आर्ट फिल्म' का रूप दे दिया है। हाँ, हम फिल्म परदे पर देखते हैं लेकिन यहाँ तो बगैर परदे आँखों के समक्ष इन कहानियों के पात्र आपस में वार्तालाप करते हुए प्रतीत होते हैं। पढ़ते–पढ़ते इन वर्चुअल पात्रों के चेहरों पर आये भाव पाठक के स्वयं के चेहरे पर उभर आते हैं।

संग्रह की पहली ही कहानी "हो सकता है आप नहीं मानें" में किशोरावस्था में पहुँची लड़की का स्वयं से प्रेम करना लाज़मी है। उसका सजना–संवरना, दूसरों के खूबसूरत लिबास पर आकर्षित होना किन्तु उसे अभिव्यक्त करने पर उसका मूल्य चुकाना होगा वह भोली–भाली कन्या कहाँ समझती है। पिता की अनुपस्थिति में असहाय माँ, रिश्ते में बंधे पुरुषों की सत्ता में रोती, कलपती, बिलखती किशोरी, लातों–घूंसों की बौछार एवं अंत में बोरोलीन की खुशबू जो कि इस कहानी में सबसे मुख्य कड़ी है। अत्यंत ही

मार्मिक कहानी, शीर्षक भी बिलकुल सटीक ....शायद आप भी इसे मानें। कहानी की कुछ विशेष पंक्तियाँ साझा करती हूँ ताकि पाठक समझ सकें कि संग्रह की ख़ासियत क्या है और मुझे पूरा भरोसा है कि इन पंक्तियों को पढ़ने के बाद पूरे संग्रह को पढ़ने के लिए पाठक ज़रूर मन बनायेंगे।

''मैं जानती हूँ मेरी इस हरकत से आप सभी को बहुत असुविधा होती है। पर आप ही बताइये अपने पिता की हमबिस्तर होने के एहसास के बाद कोई लड़की सामान्य बनी रह सकती है भला ?''

पितृकल्प ...आत्ममुग्ध पिता....इन दिनों एक नया ही शब्द कई जगह पढ़ने में आया है "नार्सिज्म", इस कहानी को पढ़ कर आप नार्सिसटिक पर्सनैलिटी डिसऑर्डर को पूरी तरह समझ सकते हैं। हालांकि लेखक ने इस शब्द का कहीं इस्तेमाल नहीं किया लेकिन कहानी पढ़ कर हर एक को ऐसा ज़रूर महसूस होगा कि क्या कोई पिता ऐसा भी हो सकता है ? बेटी शराब के पैग बना कर दे, पत्नी पति द्वारा सजाई महफिल में भोजन परोसे। काम की तलाश में निकले बच्चे और अंत में एक–एक कर अस्पताल में दम तोड़ते परिवार के सदस्य। पढ़ कर लगे कि यह अविश्वसनीय है लेकिन असली में है कटु सत्य। हमारे आस–पास ऐसी घटनाएं बहुत होती हैं जिन्हें देखने पर वे अत्यंत आकर्षक, ज़िंदादिल, व्यवहार कुशल नज़र आयें लेकिन घर की चारदीवारी में ऐसे शख्स किसी राक्षस या यूँ कहें परजीवी से कम नहीं। परिवार के सदस्य समाज में इज्ज़त बनी रहे इसलिए मुंह सिल कर अपने जीवन को इन लोगों के लिए होम कर देते हैं। लेकिन ये परजीवी किसी के सगे नहीं और स्वजनों का खून चूस कर स्वयं मदमस्त रहते हैं।

कुछ पंक्तियाँ ...''सरों एवं मेमों के कुछ बासी चेहरों के बावजूद ये हरियल पहाड़ियां, पहाड़ियों की अभिमानी चोटियाँ, रहस्य सी गहरी घाटियाँ, गुलमोहर, रजनीगन्धा रातरानी के साथ जंगली लताओं और पेड़ों की मिलीजुली ताज़गी भरी खुशबूदार हवाएं .....एक ज़िन्दगी गुज़ार देने एवं खुद को भुला देने के लिए इतना सबकुछ कम तो नहीं होता।

पर उस दिन डैडी बीती रात अपने दोस्तों का ठीक से सत्कार न होने के कारण घर में ऐसा महाभारत कर चुके थे कि दिन का खाना भी नहीं बना था। अम्मा अपने शरीर की सिकाई कर रही थीं।

मैंने कांपते हाथों से अम्मा का मुंह पोंछा पर अम्मा की खुली आँखों की स्थिर पुतलियों को देखकर मैं ही नहीं डॉक्टर भी हड़बड़ाये। पल भर के लिए सारा जीवन, सारा वार्ड, सारी गतियाँ रुक गयीं। सारी आवाज़ें जैसे लोप हो गयीं।

जोधपुर की राजस्थानी भाषा का पुट लिए यह कहानी वहाँ आस–पास के गाँवों की गंगा–जमुनी तहज़ीब की एक झलक दर्शाते हुए बहुत ही सहज रूप से आगे बढ़ती है। वहाँ की संस्कृति के अनुसार घूंघट रखने वाली काकी की कहानी जिसमें काका अपने जीवन में कभी भी अपनी पत्नी के लम्बे बालों को नहीं देख पाया। उसकी ख़्वाहिश होती है कि बस एक बार वह अपनी पत्नी के बाल देख सके। लेकिन क्या सभी ख्वाहिशें पूरी होती हैं ?

कहानी है कि खत्म नहीं होती .... .तितली सी महिला जो पूरी उन्मुक्तता से अपना जीवन जीना जानती है। उसकी खूबसूरती का वर्णन लेखक ने बखूबी किया है। दफ्तर में अन्य पुरुषों के साथ सम्बन्ध की कानाफूसी। वह अपनी खूबसूरती से ऐसा प्रेमजाल बुनती है कि कोई भी उसमें फंसे बगैर न रह सके। लेकिन पुरुष तो उस विवाहित महिला को भी अपनी जागीर समझ बैठे ....अंत अत्यंत ही रोचक। जब वह महिला उस पुरुष से दूर हो जाती है तो वह उसे पागलों की तरह खोजता है। कहीं उसकी आँखें नज़र आती हैं तो कहीं वह उसकी गंध को महसूसता है। उसे पुनः पाने की चाह और फिर एक नयी कहानी की शुरुआत।

कुछ पंक्यियाँ.... ''वह मुझे ऐसे उदास लगी जैसे कि सर्दियों में सूने आकाश में ठिठका हुआ मलिन सा चाँद .... उसके शरीर का गठन ऐसा कि सांवले रंग में वह दुबली और बीमार सी लगती जब कि खुलते हुए रंग में वह स्वस्थ और सुख से छलछलाती हुई महिला दिखती।''

वह हमेशा से मुझे एक शाम की तरह उदास लगती जो रात की गोद में बेसब्री से सहारा चाहती है, फिर भी शांत रहती है। ऐसी शाम से मैं कई बार बतियाता भी हूँ।

उसकी आँखों में शाम का सिन्दूर उतर आया।

दफ्तर की टेबलों पर हमारे रिश्ते की गंध फैल गयी थी।

बस एक बार ..... इस कहानी को पढ़ना शुरू करते ही पाठक स्वयं समझ सकते हैं कि लेखक महोदय जोधपुर से ताल्लुक रखते हैं। जोधपुर की राजस्थानी भाषा का पुट लिए यह कहानी वहाँ आस–पास के गाँवों की गंगा–जमुनी तहज़ीब की एक झलक दर्शाते हुए बहुत ही सहज रूप से आगे बढ़ती है। वहाँ की संस्कृति के अनुसार घूंघट रखने वाली काकी की कहानी जिसमें काका अपने जीवन में कभी भी अपनी पत्नी के लम्बे बालों को नहीं देख पाया। उसकी ख़्वाहिश होती है कि बस एक बार वह अपनी पत्नी के बाल देख सके। लेकिन क्या सभी ख्वाहिशें पूरी होती हैं ?

एक विशेष कहानी है रसौली जिसे मैं ने आकाशवाणी के प्रसारण में भी सुना था। अक्सर साहित्य में स्त्री विमर्श की बात करें तो समाज में उसकी दयनीय स्थिति ही दिखाई पड़ती है लेकिन इस कहानी में एक युवा महिला नकारात्मक भूमिका में है। कहानी आजकल की फैशन परस्त युवा लड़की पर आधारित है। जो परिवार और लोक–लाज को परे रख स्वयं के सुख एवं मौज–मस्ती में इतनी ज्यादा डूब जाती है और भूल ही जाती है कि वह विवाहित भी है। पूरे परिवार को इसका ख़ामियाजा भुगतना पड़ता है। लेकिन अंत ....बुरे काम का बुरा नतीजा। यदि बात करें शीर्षक की तो इस कहानी के अनुसार इस से सटीक अन्य कोई शीर्षक हो ही नहीं सकता।

एक विशेष कहानी है रसौली जिसे मैं ने आकाशवाणी के प्रसारण में भी सुना था। अक्सर साहित्य में स्त्री विमर्श की बात करें तो समाज में उसकी दयनीय स्थिति ही दिखाई पड़ती है लेकिन इस कहानी में एक युवा महिला नकारात्मक भूमिका में है। कहानी आजकल की फैशन परस्त युवा लड़की पर आधारित है। जो परिवार और लोक–लाज को परे रख स्वयं के सुख एवं मौज–मस्ती में इतनी ज्यादा डूब जाती है और भूल ही जाती है कि वह विवाहित भी है। पूरे परिवार को इसका ख़ामियाजा भुगतना पड़ता है।

इन कहानियों के अलावा संग्रह में अन्य सभी कहानियाँ 'सुख', 'परिवर्तन', 'सुनो केशव', 'अबेकस टूटता हुआ', 'खुशबू', 'कन्नी नहीं मानती', 'मटमैला सा चाँद', इससे पहले कि 'बादल बरसे', 'गुमशुदा', 'आदरजोग आदमी' सभी एक से बढ़कर एक हैं। कहानियों का प्रवाह, शिल्प, कथन अव्वल दर्ज़े का होते हुए ये कहानियाँ समाज की विद्रूपता का सटीक चित्रण करती हैं। आजकल अक्सर नकारात्मकता से दूर रह कर सकारात्मकता को ध्यान में रखने की गुज़ारिश की जाती है। लेकिन इस सबके लिए तो हास्य–व्यंग्य ही काफी है। मनोरंजन हुआ, मन खुश हुआ और बस भूल जाओ। साहित्य समाज का ही तो दर्पण कहा जाता है तो फिर समाज में छुपी बुराई को कौन लिखेगा भला ?

इस संग्रह में लेखक ने समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को निभाते हुए ऐसी ही कहानियों को संकलित किया है जो कल्पना से परे नज़र आती हैं। आम इंसान के जीवन की कहानियाँ, संघर्षरत परिवारों की कहानियाँ, रिश्तों को निभाने की ऊहापोह, उलझनें और स्वयं के सपनों को मरते हुए देखना लेकिन फिर कभी मुस्कुराते हुए आगे बढ़ जाना और कभी उन्हीं में उलझ कर रह जाना। हर कहानी पाठक के अंतस को झखझोर कर रख देती है। एक सौ पचपन पृष्ठों की इस पुस्तक में कुल सोलह कहानियाँ हैं। बोधि प्रकाशन से प्रकाशित इस संग्रह का आवरण पृष्ठ भी अत्यंत सादगी से भरा किन्तु सुन्दर है। ◆

अंतस को झखझोरती कहानियाँ
पुस्तक–कहानी है कि खत्म नहीं होती (कहानी संग्रह)
लेखक–हरीदास व्यास
पृष्ठ संख्या–155
प्रकाशन वर्ष–2022
प्रकाशक–बोधि प्रकाशन
मूल्य–150 रुपये

पता : ए2–103, चेन्नई–600119, तमिलनाडु
मो. : 9597172444

अनुजा का एक गीत

मैं आँसू का गीति काव्य, मुसकान तुम्हारी है साथी
मैं नदी धार सी शान्त सजल, तुम निर्झर की चंचल धारा !

मेरा पथ कितना एकाकी औ' फिर विषाद से नाता है
लेकिन तव उर को धूप नहीं चन्दा का आँचल भाता है
कैसे फिर अपना मिलन भला संभव होगा इस आँगन में
बदली मेरे पथ की साथी, ऋतुराज तुम्हें पर भाता है !

तुमने कर विजयी कुरुक्षेत्र, जीवन का नव–पथ खोज लिया
मेरा जीवन रण–स्थल में फिरता असफल हारा–हारा !

मैं चाह रही तुमसे मिलना, तुम पथ परिवर्तित करते हो
मैं अश्रुधार में डूब रही, तुम हँसी बाँटते फिरते हो
तुम आँगन में आकर मेरे, चाहे अठखेली कर जाओ
लेकिन मम उर में बसने से जाने क्यों इतना डरते हो ?

जीवन–आँगन में धूव छाँव तो संग–संग चलती रहती है
पर मेरे जीवन का प्रभात मैंने यामिनी पर है वारा !

मैंने हैं तुमको भाव दिए, अपने शब्दों में बाँधा है
मैंने जीवन का हर दुःख–सुख, तुम पर ही अपना साधा है
पर तुमने मम उर तोड़ दिया, तुमने मुझसे मुँह मोड़ लिया
मैंने तो दीप जलाया है, उस लौ में तुमको बाँधा है !

इस एक शिखा का अग्निदाह, तुमको चाहे पत्थर कर दे
लेकिन मैं भी इस पत्थर से पा जाऊँगी शीतल धारा !

◆

पता : 243/43, बाग लालजी,
नादान महल रोड, लखनऊ–226004
मो. : 9580303828

भारत सरकार के रजिस्ट्रार आफ न्यूज पेपर्स की रजिस्ट्री संख्या 33122/78
भारतीय डाक विभाग की डाक पंजीयन संख्या–एल.डब्लू./एन.पी. 432/2006

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

प्रमुख प्रकाशन

उत्तर प्रदेश मासिक	:	समकालीन साहित्य, संस्कृति, कला और विचार की मासिक पत्रिका समूल्य उपलब्ध एक अंक रु. 15/– मात्र, वार्षिक मूल्य रु. 180/– मात्र।
नया दौर (उर्दू)	:	सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विषय की एक उर्दू मासिक पत्रिका, एक अंक रु. 15/– मात्र, वार्षिक मूल्य रु. 180/– मात्र।
वार्षिकी (हिन्दी/अंग्रेजी)	:	उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के विस्तृत आंकड़ों एवं सूचनाओं का वार्षिक विवरण मूल्य रु. 325/– मात्र।

महत्वपूर्ण प्रकाशनों के लिए सम्पर्क करें

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र.
दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ
उत्तर प्रदेश के समस्त जिला सूचना कार्यालय

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. स्वत्वाधिकारी के लिए शिशिर, निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ द्वारा प्रकाशित तथा प्रकाश पैकेजर्स, लखनऊ में मुद्रित प्र. संपादक – **दिनेश कुमार गुप्ता**